दीवान

गंगागोबिन्द सिंह।

बङ्ग भाषा से अनुवादित।

दीवान

गंगागोविन्द सिंह ।

ऐतिहासिक उपन्यास ।

बंग भाषा से अनुवादित

Mr. Hasting's Government was one whole System of oppression, of robbery of individuals, of destruction of the public, and of supersession of the whole system of the English Government, in order to vest in the worst of the natives all the powers that could possibly exist in any Government in order, to defeat the ends which all *Governments* ought in common to have in view—*E. Burke.*

पटना

बिहार-बन्धु छापाख़ाना, बांकीपुर ।

१८८६

इस समय लार्ड नार्थ इङ्गलेण्ड के राज मंत्री हैं। हेस्टिंग्स के बुरे आचरण और क्रूर व्यवहार लार्ड नार्थ के कर्णगोचर हुए। निराश्रया रोहिला रमणियों के रोदन का आर्त्तनाद इङ्गलेण्ड पहुंचा। लार्ड नार्थ ने आग बबूला हो कर कहा—

"ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्म्मचारी गण ने सुसभ्य अङ्गरेज़ नाम को कलङ्कित किया है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सैन्य गणने निरपराधिनी रोहिला रमणियों के नासिका कर्ण छिन्न कर, उन का स्वर्णाभूषण हर लिया अन्त में वस्त्र तक छीन कर, विवस्त्रावस्था में बल पूर्वक उन को शुजाउ-द्दोला के तम्बू में पकड़ लाये। अर्थ लोलुप ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से देशशासन का अधिकार लेने के निमित्त बड़े दिन (Chris tmas) के पूर्व्व ही पार्लिमेन्ट सभा भरानी होगी।"

हेस्टिंग्स के इंगलैण्ड स्थित एजेन्ट (आम मुख़्तार) म्यकलिन साहब ने महा विपद् उपस्थित देखा। वह पहले ही हेस्टिंग्स साहब से आज्ञा पा चुके थे कि शत्रुओं की बढ़ती होने पर उसी दम उनकी ओर से पद त्याग (इस्तीफ़ा) का पत्र दाखि़ल करदेना।

म्यकलिन साहब ने कोर्ट औफ् डाइरेक्टर के यहां हेस्टिंग्स की ओर से इस्तिफा दिया। कोर्ट औफ् डाइरेक्टर भी अत्यन्त भीत हुई। उसने बिचारा, हेस्टिंग्स के असदाचार से तो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के राज्यशासन की क्षमता एक बार ही लोप होती दीखती है, झट इस्तीफा मंजूर कर लिया। यहां उनमें से ह्वीलर साहब को भारतवर्ष का गवर्नर जनरल बनाया और उनके पहुंचने तक जनरल क्लेवरिंग को काम करने की आज्ञा दी।

कोर्ट औफ् डाइरेक्टर का पत्र यहां पहुंचा हेस्टिंग्स साहब सोचने लगे अब इस नये बन्दोबस्त के समय बहुत कुछ अर्थ सञ्चय होना सम्भव है। बिशेषतः कर्नल मन्सन के मरने पर वह मनमाना कर सक्ते हैं। ऐसे समय क्या पद त्याग किया जा सकता है?

बहुत कुछ सोच बिचार कर हेस्टिंग्स ने कहा— "मैंने अपने आम मुख्तार मेकलिन साहब को इस्तीफा दाखिल करने का भार नहीं सौंपा था। मैं गवर्नर जनरल का पद त्याग न करूंगा।"

जनरल क्लेवरिंग ने हेस्टिंग्स की बातों पर ध्यान न दिया। उन्होंने तुरत हेस्टिंग्स से खज़ाना

द्वितीय अध्याय।

हेस्टिंग्स का प्रिय पात्र कौन है?

सन् १७७८ ई० की जुलाई में, एक दिन प्रातः काल, एक उच्चपदस्थ राजपुरुष अपने कलकत्ते के भवन में बैठ कर नाना प्रकार के विषय कार्यों का अवलोकन कर रहा है, नज़र के रुपये हाथ में लेकर सैकड़ों ज़मींदार, तालुकेदार सन्मुख खड़े हैं अनेकानेक ज़मींदारों के गुमाश्ता अपने २ प्रभु के पत्र भी नज़र के साथ ला कर उपस्थित हुए हैं। इस उच्चपदस्थ राजपुरुष के सामने कोई बैठने का साहस नहीं करता, इन सभों में महाराज कृष्णचन्द्र का भेजा एक ब्राह्मण हाथ में एक पत्र लेकर खड़ा था, "महाराज की जय हो" कह कर पत्र इसी उच्चपदस्थ राजपुरुष के हाथ में उस ने दे दिया। पत्र के शिरोभाग में लिखा था।

"दरबार असाध्य, पुत्र अबाध्य"
"केवल भरसा गङ्गा गोविन्द"

इस उच्चपदस्थ राजपुरुष का नाम दीवान गङ्गा गोविन्द सिंह है। पाठकों के जानने के लिये हम इस स्थान पर संक्षेप में इन का परिचय देते हैं।

१७६८ साल के पूर्व गङ्गा गोविन्द समय २ अपने बड़े भाई राधा गोविन्द सिंह के स्थान पर नियुक्त होकर बङ्ग के नायब सूबेदार मुहम्मद रज़ा खां के अधीन क़ानूनगो का काम करते थे। मुहम्मद रज़ा खां के पदच्युत होने पर राजस्व अदा का भार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ले लेने से, गङ्गा गोविन्द कार्य्य लाभ की आशा से कलकत्ते में आकर रहने लगे। हेस्टिंग्स साहब के समय में गङ्गा गोविन्द की भांति सुचतुर और कार्यदक्ष आदमी को अति सहज ही उच्चपद पाना सम्भव था। देशी लोगों पर अत्याचार करने और ठगने में गङ्गा गोविन्द हेस्टिंग्स के छोटे भाई थे, इसी से हेस्टिंग्स ने शीघ्र ही गङ्गा गोविन्द को रायराईयां राजा राजबल्लभ के अधीन डिप्टी दीवान के पद में नियुक्त किया। गङ्गा गोविन्द के हाथ में क्रम से राजस्व बिभाग का सम्पूर्ण काम काज का भार दे दिया। वह इस के सिवाय हेस्टिंग्स के यहां दीवान अथवा घर के सरकार का कार्य्य भी करते थे। गङ्गा गोविन्द सिंह की कार्य्य प्रणाली देख कर हेस्टिंग्स उन पर पहिले की तरह सन्तुष्ट हुए और अन्त को १७७७ साल में उन को कलकत्ता राजस्व कौंसिल की दीवानी पर नियुक्त किया, किन्तु

इस विपद और दुर्घटना परिपूर्ण संसार में समय २ सब को क्लेश और दुःख सहना ही पड़ता है। हेस्टिंग्स के बिरोधी दल ने १७७५ साल की मई में गङ्गा गोविन्द को घूस लेने के अपराध में पदच्युत किया। हेस्टिंग्स और बारवेल साहब सैकड़ों चेष्टा करके भी गङ्गा गोविन्द को दीवान के पद पर बहाल न रख सके। किन्तु १७७६ साल में कर्नल मन्सन की मृत्यु होने पर हेस्टिंग्स के बिरोधी दल का प्रभुत्व एक बार ही लुप्त हुआ, उस समय हेस्टिंग्स और बारबेल ने फिर गङ्गा गोविन्द सिंह को दीवान के पद पर नियुक्त किया। १७७६ साल की ८ वीं नवम्बर को गङ्गा गोविन्द फिर दीवान के पद पर नियुक्त होकर राजस्व अदा बिभाग में फिर अखण्ड प्रभुता से कार्य्यं करने लगे। देश के ज़मीदार तालुकेदार गणां सर्वदा उन के समीप कर जोड़े खड़े रहते थे। आज सैकड़ों ज़मीदार, तालुकेदार, ज़मीदारों के नायब, गुमाश्ता और आम मुख़्तार भेंट लेकर सामने खड़े हैं।

उपस्थित ज़मीदारों के धीरे धीरे बिदा होकर अपने अपने स्थान को चले जाने पर प्रायः बीस पचीस अनुचरों से घिरा हुआ, मूल्यवान सुचारु वस्त्रों

से सुसज्जित एक कृष्ण वर्ण दीर्घकाय पुरुष—के गृह में प्रवेश करते ही, दीवान गंगा गोविन्द सिंह ससम्भ्रम खड़े होकर, सादर सम्भाषण पूर्वक, उसको अपने पास बिठा नाना प्रकार वाक्यालाप करने लगे। इन लोगों के परस्पर कथारम्भ होने पर, और और आदमी धीरे धीरे दूसरे स्थान में चले गये।

अनेक वार्त्ता होने पर नवागत कृष्णकाय पुरुष ने कहा—"महाशय आप के द्वारा जो मेरी बुराई होगी, उसका मैं कभी सोच नहीं करता। आप काही मुझे बल भरोसा है।"

"मैंने आप की क्या बुराई की है?"

"मैं दीवानी से हटाया गया था यह क्या बुराई नहीं है?"

(किञ्चित हास्य करके) "हटाये जाने पर फिर तो मुकर्रर हुए।"

"फिर मुकर्रर हुआ सही; किन्तु दागी हो गया नाम पर कलंक तो लग गया!"

"साहब, दागी होना ही अच्छा है। आवश्यकतानुसार उसी दाग को देख कर मनुष्य चुन लिया जाता है। उसी दाग से तो मुर्शिदाबाद के राजस्व सभा के दीवान हुए हो।"

"आप दागी होना अच्छा बताते हैं। किन्तु पहले एक बार बरखास्त होने ही से तो राजस्व सभा मुझे फिर बरखास्त करना चाहती है!"

"प्रदेशीय राज्य कमेटी (प्रोविन्शियल काउन्सिल) शीघ्रही एबौलिश होगी। आप को उस विषय में चिन्ता नहीं करना चाहिये।"

"कमेटी के एबौलिश होने से मेरा क्या उपकार होगा?"

"नया बन्दोबस्त होगा, इस लिये आप को अवश्य ही एक न एक सुयोग मिल जायेगा।"

"मेरा क्या सुयोग होगा, आप यह कैसे जानते हैं?"

"आप तो इस समय पहचान के आदमी हैं। वारेन हेस्टिंग्स खूब जानते हैं आप बहुत मुस्तैद और लायक आदमी हैं। आपको वह कभी न छोड़ेंगे।"

"आप की इन सब बातों का अर्थ मैं कुछ भी नहीं समझ सक्ता। गवर्नर जनरल यदि मुझको मुस्तैद समझते तो सन १७७२ के शुरू में मुझे क्यों पदच्युत करते? मैंने तो जी जान से सरकारी काम पूरा किया। सन १७७० के घोर दुर्भिक्ष के समय भी राजस्व अदा करने में कोई त्रुटि न की।"

"राजस्व अदा सम्बन्ध में आप की तरह मुस्तैद आदमी नहीं पाया जाता, इसे गवर्नर जनरल भी अच्छी तरह जानते हैं।"

"ऐसा जानते हैं, तो बरख़ास्त क्यों किया?"

"उन्हीं ने क्या अपनी इच्छा से आप को बरख़ास्त किया था। विलायत के क़ानून से ऐसा करना पड़ा—ख्रिष्टीय धर्म के अनुरोध से—आपको उस समय बरख़ास्त करना ही उचित था। इसीसे आपको बरख़ास्त किया था।"

"आपकी बातें मैं नहीं समझता विलायत के क़ानून से क्या—ज़रा समझा कर तो कहिये।"

"पुरनिया के लोगों ने आप के विरुद्ध गुरुतर अभियोग उपस्थित किया था राजस्व अदा के निमित्त कई सौ ज़मीदार तालुक़ेदारों की स्त्रियों तक को आप ने माल की कचहरी में लाकर बेपर्द किया था। स्त्रियों को पीटना या उनको बेपर्द करना, विलायत के लोग बहुत ज़ुल्म समझते हैं इन सब बातों के ज़ाहिर होने पर हेस्टिंग्स साहब आप को बरख़ास्त न करते तो उन्हीं पर दोष पड़ता; इसी से लाचार हो कर आप को बरख़ास्त किया था। किन्तु निश्चय

जानिये आप भी उन के एक विशेष प्रिय पात्र हैं। आप को उन्हीं ने हृदय में गांठ रक्खा है।

"उस साल ज़मींदार, तालुक़ेदारों की स्त्रियों को इस तरह धर कर न लाने से एक पैसा भी अदा न होता, उस समय तो आप लोगों के हाथ में राजस्व अदा का भार न था। मुहम्मद रज़ा खां नायब सूबेदार थे वह बार बार हमारे पास हुकम करने लगे—"जिस तरह हो सके; पुरनिया की सब जमा वसूल करनी होगी"——इधर महाकाल पड़ा ज़मीदार तालुक़ेदार गया, प्रजा से एक पैसा भी कर अदा न करा सके। उन लोगों को पूर्व्व संचित रुपयों से राजस्व देना पड़ा किन्तु घर का रुपया क्या आदमी सहज में छोड़ना चाहता है? इसी से बड़ी दिक़्क़त उठा कर, मुझे जमा वसूल करनी पड़ी थी।"

"किन्तु पुरनिया उसी साल से जन शून्य हुआ और वहां की जमा भी कम हो गई।"

"पुरनिया जन शून्य हुआ, तो मैं क्या करूं मैं ने तो सब आदमियों का माथा नाश नहीं किया ज़मींदार तालुक़ेदारों की स्त्रियों को माल-कचहरी

में बुलाने ही से, उन्हें जाति भ्रष्ट होना पड़ा, इसी से वह देश छोड़ कर भाग गये और कई जन मारने से मरे। मुझे यह नहीं जान पड़ता कि दो एक सौ से अधिक लोग मरे होंगे। उस में भी मेरा कुछ दोष नहीं। ये सब सैकड़ो बेंत मारने पर भी रुपया देने में सम्मत नहीं हुए, तब काँटेदार बेल की डाल से इन लोगों को पीटने की आज्ञा दी थी। उसी से अनेकों की मृत्यु हुई, किन्तु ऐसा न करने से क्या जमा वसूल हो सकती थी?"

"उस गयी बात को लेकर इस समय तर्क करने से क्या होगा आप मत डरिये। हेस्टिंग्स साहब आप की तरह मुस्तैद आदमी को न छोड़ेंगे। प्रोविन्शियल कौन्सिल के मेम्बर गण सैकड़ों चेष्टा करके भी आप की कुछ बुराई न कर सकेंगे। प्रोविन्शियल कौन्सिल को एबौलिश करने लिये गवर्नर जेनरल ने कोर्ट ओफ डाईरेक्टर को लिखा है किन्तु कोर्ट ओफ डाईरेक्टर ने १७७६ सन् की ४ थी जुलाई की चिट्ठी में हेस्टिंग्स साहेब के प्रति विरक्तता प्रकाश की है। उन्हों ने कोई नवीन परिवर्त्तन की आवश्यकता विवेचना नहीं की है।"

"कोर्ट औफ् डाईरेक्टर गवर्नर जेनरल पर अप्रसन्न क्यों हुई है ?"

"उस ने अनेक विषयों में अप्रसन्नता प्रकाश की है।"

"किस किस विषय में ?"

"मैं बरख़ास्त हो कर फिर मुक़र्रर हुआ हूं, यह निश्चय होता है कि उसी कोर्ट औफ् डाईरेक्टर इस समय भी नहीं जानती। मेरे हाथ में राज्य विभाग के कार्य्य कर्म्म का भार रहा है, इसी से उन्हों ने ऐसा असन्तोष प्रकाश किया है *। एतद्भिन्न मनोहर मुकरजी के अभियोग का कागज पत्र और थेकर साहेब का कार्य्य कलाप देखकर हेस्टिंग्स और बारवेल के ऊपर वह अत्यन्त अप्रसन्न हुई है।"

"मनोहर मुखोपाध्याय का मुक़द्दमा कैसा हुआ है।"

"मनोहर मुखोपाध्याय बेटमैन साहब का नौकर था, बेटमैन साहब मुंगेर के कलेक्टर थे। मुंगेर और कारिकपुर दोनों महाल का बेटमैन साहेब ने धान्दू बहादुर कृपा राम के नाम से इजारा लिया

* Vide note (1) in the appendix.

था। धान्दू बहादुर नाम का कोई आदमी नहीं था, कृपा राम मनोहर का एक अनुगत मनुष्य था। बेटमैन के आज्ञानुसार मनोहर धान्दू बहादुर और कृपा राम का ज़ामिन हुआ था बेट मैन ने इन दोनों महालों के ज़मीदारी की पदभ्रंश करके स्वयं महाल का इजारा ले लिया, और महाल का जो कुछ राजस्व अदा किया था, उस को भी उन्हों ने स्वयं हथिया लिया। कम्पनी का प्राप्य राजस्व १२०००) रुपया बाक़ी पड़ गया था। १२०००) रुपया बाक़ी पड़ने की रिपोर्ट पर जांच आरम्भ हुई। उस समय मनोहर को रुपयों के निमित्त पकड़ने पर उस ने दरखास्त की, कि धान्दू बहादुर नाम का कोई आदमी नहीं है बेटमैन साहेब धान्दू बहादुर और कृपा राम के नाम की मुहर बनवाकर अपने पास रखते थे, बेटमैन ही इन दोनों महालों के इजारेदार थे। और उन के कहने के अनुसार ही वह ज़ामिन हुआ था।"*

"इस में क्या कोई नयी बात है श्री हट्ट में क्या, ऐसा तो सर्वत्र होता है।"

"श्री हट्ट के गोलमाल में स्वयं बारवेल साहेब के लिप्त होने से ही कोर्ट ओफ़ डाईरेक्टर को संदेह

* Vide note (2) in the appendix.

हुआ है। राजस्व परिदर्शन सभा (Committee of circuit) ने श्री हट्ट की ज़मींदारी जमा के बदले ५१ हाथी लेने का बन्दोबस्त किया। किन्तु जिस व्यक्ति के नाम से अङ्गरेज़ों का पट्टा क़बूलियत लिखा पढ़ा गया था, उस नाम का कोई आदमी श्री हट्ट में नहीं है। श्री हट्ट के रेज़िडेन्ट थैकर साहेब ने ही एक कल्पित नाम से इन सब महालों का इजारा लिया था। उन्हीने हाथी के दाम की बावत परिदर्शन सभा से और भी २२०००) रुपया अगौढ़ी लिया था। इसके पीछे कई एक हाथी भेजे, वे सब प्रायः रास्ते ही में मर गये। केवल १६ हाथी पटना पहुंचे। श्री हट्ट के इसी गोल माल के सम्बन्ध में हेस्टिंग्स और बारवेल का कोर्ट औफ़ डाईरेक्टर ने यथोचित तिरस्कार किया है। *

"यह सब गोल माल शीघ्र ही मिट जायगा, अङ्गरेज़ लोगों के सात खून माफ़ हैं। किन्तु मैं आपसे एक बात कहने आया हूं। प्रतिज्ञा कीजिये, कि आप मेरी बुराई की चेष्टा न करेंगे। और मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं, कि मैं आपकी बुराई न करूंगा

* Vide note (3) in the appendix.

आप जिस तरह मुझसे असन्तुष्ट हुए हैं उसे मैं समझता हूं, किन्तु वह स्त्री चली गई है। कहीं उसका पता नहीं लगता।”

“मैं कभी आपकी कोई बुराई न करूंगा। इस विषय में आप बेखटके रहें। इस समय प्रोविन्शियल कौंसिल के उठ जाने ही में भला है। दो तीन वर्ष में एकाध परिवर्तन वा एकाध नया आईन जारी न होने से, सरकारी कर्म्मचारियों को कुछ लाभ नहीं होता है। आप कुछ काल तक यहां रहिये, देखिये कल की कौन्सिल में कौन सा नियम निर्धारित होता है। इसके पीछे जो हो हमलोग सलाह करके स्थिर करेंगे।”

“तो आज बिदा होता हूं, आज से आपके साथ यही बात रही कि आपभी मेरी बुराई की चेष्टा न करेंगे, और मैं भी आपकी बुराई न करूंगा। उस स्त्री को मैं अभी खोजता हूं।”

यह कहकर दूसरा आदमी दीवान गंगा गोविन्द सिंह से बिदा होकर चला गया।

इनका नाम, राजा देवी सिंह है। जिस समय मुहम्मद रज़ा खाँ नायब सूबेदार थे, उस समय राजा

देवी सिंह को पुरनिया के राजस्व अदा का भार मिला था। किन्तु इनके अत्याचार से पुरनिया प्रायः उजड़ हुई थी। सुतरां मुहम्मद रज़ा खां की पद च्युति पर १७७२ साल में जिस समय वारेन हेस्टिंग्स परिदर्शन सभा (Committee of Circuit) के सभा पति हुए थे, उस समय उन्हों ने राजा देवी सिंह को पदच्युत किया। किन्तु १७७३ साल में जिस समय कलकत्ता मुर्शिदाबाद, बर्द्दमान, ढाका, पटना और दिनाजपुर की जमा वसूली के लिये एक एक प्रौविन्शियन कौंसिल स्थापित हुई, उस समय फिर हेस्टिंग्स साहेब ने राजा देवी सिंह को मुर्शिदाबाद कौन्सिल का दीवान नियत किया। प्रौविन्शियल कौन्सिल के मेम्बर गण प्रदेश के राजस्व अदा-सम्बन्धीय नियम कुछ भी नहीं जानते। मुर्शिदाबाद के कौंसिल का सम्पूर्ण कार्य्य देवी सिंह अपने इच्छा-नुसार ही सम्पादन करते थे अनेकानेक ज़मींदारों को उनके महालों से तहस नहस कर अपने नाम उन सब महालों के इजारा का बैनामा करा लिया। इसके भिन्न देवी सिंह ने अङ्गरेज़ों को बाध्य करने के निमित्त और एक चतुराई की। वह सदैव ही दस

बारह स्त्रियों को संग रखता था। प्रोविन्शियल कौन्सिल के अङ्गरेज़ कर्म्मचारियों के प्रयोजन के समय, यह दो एक स्त्रियों को उन के निकट भेजता था। अंग्रेज़ कर्म्मचारी गण इसी से देवी सिंह पर विशेष सन्तुष्ट रहते थे।

किन्तु चिरकाल किसी का भी सम भाव से अति-वाहित नहीं होता है। १७७८ साल के कुछ काल पहिले मुर्शिदाबाद को प्रोविन्शियल कौंसिल देवी सिंह से अत्यन्त असन्तुष्ट हो कर, उसे बरखास्त करने को उद्यत हुई। देवी सिंह किसी प्रकार से उन को सन्तुष्ट करने में सफल न हुए। सुतरां इस समय हेस्टिंग्स साहेब के शरणागत होने को कलकत्ता आये थे; और हेस्टिंग्स के विशेष प्रेम पात्र गंगा गोविन्द सिंह के शरणागत हुए।

तृतीय अध्याय

राजस्व अदा करना डकैती करना है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंग, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त होने पर, राजस्व अदा के उद्देश्य में अंगरेज़ों ने भिन्न भिन्न श्रेणी के भूम्याधिकारियों पर कैसा अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार किया था, उसे संक्षेप में लिखे बिना इस उपन्यास की लिखित घटना को पाठक सहज में नहीं समझ सकते।

सन् १७६५ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंग, बिहार और उड़ीसा की दीवानी सनद प्राप्त हुई। किन्तु राजस्व अदा का भार नायब सूबेदार मुहम्मद रज़ा खां के हाथ रहा, कादर मुहम्मद रज़ा खां अधिक राजस्व अदा करके अंगरेज़ों को प्रसन्न करने के अभिप्राय से प्रजा को अत्यन्त कष्ट देने लगा। उसी की अमलदारी के समय राजा देवी सिंह ने पुरनियां वासी प्रजा और भूम्याधिकारियों पर घोर निष्ठुराचरण किया था। पूज्य ज़मीदार और तालुकेदारों की स्त्रियों तक को पकड़ कर कचहरी लाया, किन्तु निष्ठुर अत्याचार का प्रभुत्व कभी चिरस्थायी नहीं

होता है। अत्याचारी राजा किम्बना शास कर्त्ताओं को शीघ्र पदच्युत होना पड़ता है। अत्याचार ही राज विप्लव का एक मात्र मूल कारण है।

१७७० साल के अकाल पर मुहम्मद रज़ा खां पदच्युत हुआ। बंग के गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने राजस्व अदा का भार अपने हाथ में लिया। किन्तु दुर्भिक्ष के समय बंग के प्रायः एक तृतीयांश कृषकों का प्राण नाश हुआ था। सुतरां बंग का राजस्व क्रमशः कम होने लगा। वारेन हेस्टिंग्स ने उस समय राजस्व वृद्धि करने के अभिप्राय से जमींदारों पर कर बढ़ाना आरम्भ किया। ज़मींदारों को उनकी पैतृक ज़मीदारी से निकाल कर कई एक नौकर और दूसरे दुष्ट लोगों को उन सब ज़मीदारियों का इजारा देना आरम्भ किया। वे सब प्रजा का सर्बनाश करके उनकी धन सम्पत्ति सब लूटने लगे।

अतएव प्राचीन ज़मीदारों में से कई एक अपनी अपनी प्रजा रक्षा का उद्योग करते थे। वह प्रजा पर प्रायः अत्याचार नहीं करते वह भली भांति जानते थे कि प्रजा के नाश होने से उनकी ज़मीदारी की कभी रक्षा न हो सकेगी।

किन्तु जिन अर्थ लोलुप नौकर और महाजन लोगों को हेस्टिंग्स प्राचीन ज़मीदारों की ज़मीदारी का इजारा देने लगे, वे प्रजा के मंगलामंगल के विषय में कुछ भी चिन्ता नहीं करते थे। दो एक वर्ष के लिये एक एक परगना की ज़मीदारी का इजारा लेते थे। सुतरां उनके इजारा की मैयाद शेष होने के पहले छल बल कौशल से प्रजा से जितना रुपया पा सक्ते थे लेते थे। किसी ग्राम के दो चार घर की प्रजा दूसरे स्थान को भाग गई, तो उसी ग्राम वासी शेष प्रजा को भागे हुए की बाकी जमा देनी पड़ती थी। इन सब इजारेदारों के अत्याचार से देश हाहा कार परिपूर्ण हुआ। इजारेदारों के प्रहार से लोगों का प्राण बिनाश होने लगा।

कोई कोई इजारेदार ज़मीदारी पाने की आशा से इतनी अधिक जमा स्वी करके इजारा लेते थे, कि वह लोग फिर गवर्नमेंट का राजस्व नहीं दे सकते थे। सुतरां उनसे कम्पनी का प्राप्य राजस्व अदा नहीं होता था। इस भांति इजारा प्रणाली के द्वारा गवर्नमेन्ट का राजस्व दिनों दिन और भी कम होने लगा।

फिर कम्पनी का प्राप्य राजस्व अदा कराने के लिये हेस्टिंग्स साहब ने तत्काल परिवर्त्तित नियमानुसार जिन सब अंगरेज़ कर्मचारियों को नियुक्त किया था, कालान्तर में वे ही अतिशय प्रजा पीड़क हो गये।

१७७२ सन की १४वीं मई की नियमावली द्वारा देश के सब ज़मीन का पञ्च वार्षिक बन्दोवस्त किया गया। अंगरेज़ लोगों के साथ ही अधिकांश ज़मीन का बन्दोवस्त हुआ। हेस्टिंग्स साहब ने स्वयं परिदर्शन कमेटी के अध्यक्ष होकर भिन्न भिन्न ज़िलों के ज़मीन का सर्वोच्च डाक पर बन्दोबस्त किया। इस बन्दोबस्त के पीछे हर ज़िले में एक एक अंगरेज़ कर्मचारी को कलेक्टर की उपाधि प्रदान पूर्वक राजस्व अदा का भार दे दिया।

किन्तु कोई कोई कलेक्टर प्राचीन ज़मीदारों को निकाल कर स्वयं ज़मीन के इजारे का बेनामा करा लेते; और उन्हीं सब ज़मीदारियों से जो कुछ राजस्व अदा होता उसे आप हथियाते थे, वे लोग ईस्ट इण्डिया कम्पनी को प्राप्य राजस्व कुछ भी नहीं देते थे। इससे भी

कम्पनी का बहुत राजस्व बाकी पड़ गया। हेस्टिंग्स स्वयं घूस लेते थे। इसी से उन सब कलेक्टरों पर वह शासन नहीं कर सकते थे। इन लोगों पर शासन किये जाने से उनका भी दोष विलायत में प्रकाश हो जायगा, इसी आशंका से उनको चुप होना पड़ता था। इसके पश्चात हेस्टिंग्स ने अनन्योपाय होकर कलेक्टर का पद एबौलिश किया। राजस्व अदा का भार फिर बंगाली कर्मचारियों को दिया, और उन सब बंगाली कर्मचारियों के कार्यों की देख रेख करने के लिये पटना, मुर्शिदाबाद, बर्द्धमान, दिनाजपुर, ढाका और कलकत्ता इन छः जिलों में छः प्रोविन्शियल कौंसिल अर्थात प्रदेशीय राजस्व सभा स्थापित की। पूर्वाध्याय लिखित राजा देवी सिंह मुर्शिदाबाद प्रोविन्शियल कौंसिल के और गंगा गोविन्द सिंह कलकत्ता की प्रोविन्शियल कौंसिल के दीवान हुए यही दोनों हेस्टिंग्स के विशेष प्रिय थे किन्तु पांच साला बन्दोबस्त की मैयाद बीतने पर नये बन्दोबस्त का समय आया। प्रोविन्शियल कौन्सिल के स्थापन काल में ज़मीन के बन्दोबस्त का भार भी

उनकी लोगों के हाथ में रहना निश्चित हुआ था। किन्तु उनके हाथ बन्दोबस्त का भार रहने में गवर्नर जेनरल हेस्टिंग्स को कुछ लाभ नहीं। इसीसे इस समय प्रोविन्शियल कौंसिलको एबोलिश करनेके लिये हेस्टिंग्स साहब बार बार कोर्ट औफ डाइरेक्टर को लिखने लगे। किन्तु कोर्ट औफ डाइरेक्टरने उनकी बातों पर कान नहीं दिया। *

प्रोविन्शियल कौंसिल के एबोलिश करने का एक विशेष कारण था। शिताब राय के पुत्र कल्याणसिंह ने पटना विभाग की बहुत सी ज़मीनका एक आदमी के साथ बन्दोबस्त करने के लिये गवर्नमेन्ट को लिखा था। इस ओर कल्याण सिंह के कर्मचारी खेलाराम बाबूने कलकत्ता आकर दीवान गङ्गा गोविन्द सिंह के द्वारा हेस्टिंग्स को चार लाख रुपया घूस देने का प्रस्ताव किया। हेस्टिंग्स ने कल्याण सिंह के साथ ही ज़मीन का बन्दोबस्त करना स्थिर किया। किन्तु पटना प्रोविन्शियल कौंसिल ने लिखा था कि कल्याण सिंह ने जो राजस्व देना स्वीकार किया था, उस से अधिक जमा में ज़मीन का बन्दोबस्त हो सकेगा।

*Vide note (4) in the appendix.

इस से हेस्टिंग्स बड़े सङ्कट में पड़े। कल्याण सिंहके साथ बन्दोबस्त न करने से चार लाख रुपया नहीं मिल सकता।

हेस्टिंग्स के विरोधी दल के दो जनों की मृत्यु होने से भी फ्रांसिस फिलिप और ह्वीलर साहब सदा ही हेस्टिंग्स साहब के कार्य्य का प्रतिवाद करके कौंसिल के कार्य्य विवरण की पुस्तक में समय समय इन सब मन्तव्यों को लिपि बद्ध कर रखते थे, उसी से कोर्ट ओफ् डाईरेक्टर हेस्टिंग्स के मन्द अभिप्रायको सहज ही समझ सकती थी।

किन्तु कुकर्मी लोग प्रायः निर्लज्ज होते हैं। कौन्सिल के और मेम्बरों ने हेस्टिंग्स को कई बार घुसहा कह कर उनका अपमान किया था।* हेस्टिंग्स को इससे भी लज्जा नहीं बोध होती। पंच साला बन्दोबस्त की मैयाद बीतते ही वह प्रोविन्शियल कौन्सिल को एबोलिश करने के निमित्त चेष्टा करने लगे। किन्तु किस कौशल से प्रोविन्शियल कौन्सिल उठादें, यह कुछ भी स्थिर न कर सके, अन्तमें अपने प्रिय गङ्गा गोबिन्द सिंह से परामर्श कर के १७७६

* Vide note (5) in the appendix.

साल में फिर भी मुफ़स्सिल के लिये एण्डरसन और बोगेल साहबों को नियुक्त किया। हेस्टिंग्स ने सोचा था कि इन लोगों की अन्तिम रिपोर्ट के अवलम्ब से प्रोविन्शियल कौन्सिलको उठा दे की चेष्टनो करेंगे।

हेस्टिंग्स का विरोधी दल उनको रिश्वतखोर और पक्षपाती कह कर घृणा करता था। उन लोगों के ऐसा कहने का विलक्षण कारण था। १७७२ साल के रेगुलेशन [Regulation] से नियम किया हुआ था कि अंगरेज़ कलेक्टर गण या उनके अधीनस्थ कोई इजारा न ले सकेगा किन्तु हेस्टिंग्सके नौकर कान्त पोद्दार ने अन्यून २९ परगनों का इजारा लिया था। उन्ही सब परगनों के पूर्व ज़मींदार गण अपनी पैतृक ज़मींदारी से एक बार ही समूल नाश किये गये थे। मुंगेर के कलेक्टर बेटमैन साहब ने धान्टू बहादुर नाम के एक कल्पित मनुष्य के नाम से मुंगेर और कासिकपुर परगना की ज़मींदारी का स्वयं इजारा लिया था। बेकर साहेब ने श्रीहट्ट की ज़मींदारी का अन्य एक कल्पित नाम से इजारा लिया था। उनके इन वंचना मूलक

कार्य्यों में कौन्सिल के एक दूसरे मेम्बर बारवेल साहब का भी लिप्त होना बताया गया था।

थैकर के कुकर्म्मों को छिपाने के लिये गवर्नर जनरल और बारवेल साहब ने विशेष चेष्टा की थी, यह कोर्ट ऑफ डाईरेक्टर के पत्रादि द्वारा भली भांति ज्ञात हुआ और बर्द्धमान एवं राजशाही की रानी भवानी पर हेस्टिंग्स और बारवेल साहब ने बहुत कुछ अन्याय किया था। * बारवेल साहब ने अपना दोष छिपाने के लिये बर्द्धमान की महारानी के नाम पर बिलायत में मिथ्या अपवाद प्रचार करने की चेष्टा की थी। उन्हीं ने अतिशय निन्दित मनुष्य की भांति बर्द्धमान की महारानी को नीच वेश्या कह कर प्रसिद्ध किया था; परमधार्म्मिक राजा रामकृष्ण को मिथ्यावादी कहना आरम्भ किया। *

वस्तुत: ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रारम्भ ही से सदैव इस देश के सज्जन दुर्जन कहलाये और देवी सिंह की भांति दुश्चरित्र जन ही राज सरकार में विशेष प्रतिष्ठा पाने में समर्थ होते गये।

* Vide note (6) in the appendix.

* Vide note (7) in the appendix.

हेस्टिंग्स की कौंसिल के एक मेम्बर फ़िलिप फ्रांसिस ने देशीय प्राचीन ज़मींदारों के साथ भूमि का चिरस्थायी बन्दोबस्त होने के लिये कई बार प्रसंग चलाया था। किन्तु हेस्टिंग्स ने उनकी बातों में उस समय कान नहीं दिया। ज़मींदारों की भूमि में कोई स्वत्व होना वह स्वी नहीं करते थे। किन्तु कालान्तर में फ्रांसिस के मतानुसार ही भावी गवर्नर-जेनरल कौर्नवालिस को कार्य्य करना पड़ा। इसी घटना के बारह चौदह वर्ष पीछे सन १७९३ ई० में लार्ड कौर्नवालिस ने ज़मींदारों के साथ भूमि का चिरस्थायी बन्दोबस्त किया। भूमि सम्बन्धी चिरस्थायी बन्दोबस्त ही ने अङ्गरेज़ी राज्य को दृढ़ किया। उसी समय से अङ्गरेज़ों पर देशीय लोग किञ्चित् विश्वास करने लगे।

चतुर्थ अध्याय।

श्वशुर और पुत्र बधू।

माघ मास सायं काल उपस्थित है। प्राण नगर के पथ पार्श्व स्थित धान के खेत से एक एक बोझा प्याल का माथे पर धरे तीन कृषक गृह की ओर जा रहे हैं। रास्ते के दोनों ओर सुबिस्तीर्ण जंगल फैला हुआ है। किन्तु खेत की बहुत सी ज़मीन तीन वर्ष से नहीं जुती है, कहीं कहीं केवल दो एक खेतों में धान के पौधों का चिन्ह देखा जाता है, चार पांच वर्ष पूर्व इन्हीं खेतों से असंख्य कृषक श्रेणी बद्ध हो कर गाते हुए अपने अपने गृह को लौटते थे। किन्तु प्राण नगर इस समय प्रायः प्राणी शून्य हुआ है, रास्ता के पश्चिम ओर वाले खेत के पश्चिम छोर में दो एक कृषकों की टूटी फूटी कुटी देखी जाती हैं। आज केवल तीन कृषक उन्हीं कुटियों की ओर चुप चाप चले जा रहे है, सब का मुख बिषाद परिपूर्ण है धीरे धीरे चलने से उन की निर्बलता बोध होती है, अन्न कष्ट से शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है।

ये कृषक गण जिस राह से अपने घर की ओर जाते थे, वह दिनाजपुर शहर से बराबर प्राण नगर के जंगल से होती हुई ठाकुर गांव तक गई है। इन में कई एक कृषकों के घर प्राण नगर के उत्तर की ओर हैं, कृषक गण सड़क के पूरब ओर के खेत से पश्चिम ओर वाले में हो कर घर को जाते थे। उन में से एक बूढ़ा होने के कारण पछड़ गया है, ये दोनों जन आगे २ चले जाते हैं उन्हों ने रास्ता पार करके पश्चिम ओर वाले खेत में प्रवेश किया। वृद्ध कृषक ने रास्ते में आते ही देखा कि एक वृद्ध वैष्णव शीघ्रता से भिक्षा की झोली कांधे में धरे, दक्षिण ओर से बराबर उत्तर की ओर चला जाता है। वैष्णव को देखते ही वृद्ध कृषक ने कहा "गोसाईं जी जल्दी घर जाइये, मैं ने आज कम्पनी के पांच बरकन्दाजों को उत्तर की ओर जाते देखा है।"

बूढ़े ने कांप कर कहा, "और भी एक आदमी ने मुझे यह कहा है, मैं बहुत घबरा गया हूं, बरकन्दाज़ किधर गये हैं ?"

कृषक—इसी सीधी राह से बराबर सामने चले गये हैं। आप इन्ही खेतों के भीतर से जाइये,

तो उन से आगे घर जा सकेंगे। इधर वह आप ही को ढूढ़ने आये हैं।

वृद्ध वैष्णव छन भर भी बिलम्ब न करके शीघ्रता से आगे चला, चारों ओर अन्धकार छा गया, वृद्ध उस समय भी चिप्त की भांति दिशाओं से अज्ञात दशा में चला जा रहा है। "हा परमेश्वर! पुत्र गये, धन गया, सम्पत्ति गई, तब भी पापी प्राण नहीं जाता।" यही कहते कहते लग भग आधे घंटे में एक पर्ण कुटी के द्वार पर आ पहुंचा।

इस पर्ण कुटी के पश्चिम ओर और भी दो कुटी थीं। इन तीनो कुटियों के चारों ओर जंगल है, कुटी में प्रवेश करने के लिये जंगल से आना होता है, किन्तु जंगल के बाहर से कुटियां नहीं दिखलाई देतीं।

कुटी के द्वार पर खड़े होकर भय की दशा में वृद्ध के "पुत्री" "पुत्री" कहते ही, एक रमणी आ कर द्वार पर खड़ी हुई। निश्चय होता है रमणी ने दो तीन मास पूर्व में शिर मुण्डन कराया है। उसके केश युवतियों के केश कलाप की भांति सुदीर्घ तो नहीं बालकों के समान हैं। पुरुष की

पोशाक पहनाने से वह चौदह वर्ष का बालक बोध होगी। शरीर दुर्बल, मुख में बालिका सुलभ सरलता का प्रकाश; किञ्चित लक्ष्य करके देखने से विदित होता है कि अपने शरीर की सौन्दर्य राशि छिपाने के लिये यह सदा चेष्टा करती है। किन्तु उसी इस चेष्टा द्वारा उसका सौन्दर्य शत गुण वृद्धि पाता है। इसकी सुदीर्घ नासिका विशाल नेत्र और चित्रांकित भ्रू युगल ने, परिशोभित कमल वदन में विषाद मिश्रित पवित्रता और सरलता उद्भासित करके; उस मुख को एक लावण्य मण्डित किया है। केवल अंग सौष्ठव, जो सौंदर्य का प्रधान अंग है, विषाद, दारिद्र्य, रोग और वार्द्धक्य उस सौंदर्य को सहसा विनष्ट कर सकते हैं; किन्तु वह सौंदर्य आभ्यन्तरिक सौंदर्य है, वह किसी अवस्था में विकृत नहीं होता है। इस रमणी का सौंदर्य इसके हृदय की स्वच्छता से उत्पन्न है, सुतरां यह अविनाशी सौंदर्य है।

इस परम सुन्दरी रमणी का वयस पचीस वर्ष से किञ्चित अधिक है, किन्तु देखने में बालिका ही ज्ञात होती है। रमणी के द्वार देश में आते ही वृद्ध ने कहा—

"पुत्री सर्वनाश हुआ। निश्चय होता है कि दुरात्मा देवी सिंह ने फिर हम लोगों को ढूढ़ने के लिये मनुष्य नियुक्त किया है। आज भिक्षा करने गया था, पथ में सुना कि इस ओर चार पांच कम्पनी के बरकन्दाज़ आये हैं।"

"उसके निमित्त आप क्यों इतना भयभीत हुए हैं? हम लोगों का सर्वस्व तो हरण कर ही लिया है। अब और हमारा क्या करेगा?"

"पकड़ कर क़ैद कर देगा।"

"क़ैद करके कारागार ही में रक्खेगा। विषय सम्पत्ति, मान मर्यादा सब गया है। अब एक मात्र धर्म रक्षा कर लेना ही उचित है।"

"पुत्री! देवी सिंह कैसा नर पिशाच है उसे तुम नहीं जानती, उसके हाथ पड़ने से क्या किसी रमणी की धर्म रक्षा सम्भव है? मुझे क़ैद करेगा इसका डर नहीं है, किन्तु यदि तुमको पकड़ ले जाये, तो मेरा लोक परलोक दोनों नष्ट हुआ। इसीसे मैंने सोचा है कि मैं आज अपने को स्वयं पकड़ा दूंगा। तुम रूपा, जगा और बूढ़ी दासी को संग लेकर जितना शीघ्र हो सके जंगल में भाग जाओ।"

बृद्ध की वार्त्ता सुन कर युवती अब न रुक सकी। रोते रोते बृद्ध का चरण धर कर बोली—

"मै आप को छोड़ कर और कहीं नही जाउंगी, आप को जहां कैद रक्खेंगे, मैं वहां ही कैद रहूंगी, ऐसा करने ही से अन्त में आप के निकट रह सकूंगी। जब आप बहुत प्यासे होंगे, तब आप के मुख में एक बिन्दु जल देने पर मैं कारागार में भी अपने को सुखी समझूंगी, किसके लिये इस पापी जीवन को धारण करती हूं? विधवा का जीवन बिड़म्बना मात्र है। किन्तु इस दुःख विपद में भी जब क्षुधा के समय आप को किञ्चित् अन्न रन्धन करके दे सकूं, आप दुःखी हो कर गृह को आवें तब आप के निकट बैठ कर जिस समय किंचित् पंखा झलूं, उस समय मै परम संतोष लाभ करूंगी। इन १२ वर्षों से आप के संग ही संग हूं, इस समय आप को छोड़ कर मैं एक मुहूर्त्त भी अन्य स्थान में न रह सकूंगी। आप को अब श्वशुर कहना नहीं चाहती हूं, माता के पास कन्या जैसे निष्कपट हो कर मन का भाव प्रकाश करती है वैसे ही मैं आप से मन की सब बातें कहती हूं। आप मेरे श्वशुर

नहीं हैं, मेरे पिता नहीं हैं, आप मेरी मा हैं।"

"पुत्री! तुम्हारा कारागार में जाना क्या मैं सह सक्ता हूं? तुम्हारा अपमान पुत्र शोक से भी शत गुण मेरे हृदय को दग्ध करेगा। अभी वृद्धा को संग लेकर भागो।"

"इस समय और हम को मान अपमान का क्या भय है? अब हम को लोक लज्जा का भयही क्या? हम लोगों की विषय सम्पत्ति मान मर्य्यादा सब ही गई है। इस समय यदि भय है तो धर्म्म का, धर्म्म की जिससे रक्षा हो उसी की चेष्टा करेंगे। ईश्वर की दृष्टि में तो निर्दोष होंगे। हम लोगों की ऐसी अवस्था में लोक लज्जा से डरने का कुछ प्रयोजन नहीं, आप के आज पकड़ जाने पर मैं निश्चय ही आप के साथ कारागार में प्रवेश करूंगी।

"पुत्री! यदि मेरे संग तुम को भी पकड़ ले जायेंगे, तो तुम को मेरे पास न रहने देंगे। तुम को यदि कैद करेंगे, तो दूसरे स्थान में रक्खेंगे। किन्तु पकड़ पाने पर देवी सिंह निश्चय ही तम

को किसी कामी अंगरेज़ के यहां प्रेरण करेगा। देवी सिंह अनेकानेक अंगरेज़ों का अनुग्रह प्राप्त करने के लिये उत्तम कुल की महिलाओं को पकड़ कर, उन के पास भेज देता है। इस लिये कहता हूं कि अब क्षण भर भी विलम्ब न करके वृद्धा दासी और अपनी इन्हीं विश्वस्त प्रजा को संग ले कर यहां से प्रस्थान करके काशी धाम को चली जाओ।"

युवती ने उस समय जाना कि वृद्ध के साथ जाने से भी उसके निकट न रह सकेगी। तब निराश होकर अधो बदन से अश्रु पात करने लगी। किञ्चित कालोपरान्त, बाष्पव-रुद्ध-कन्ठ से कहने लगी—

"मृत्यु होना ही मेरे लिये उचित था। आपके पुत्र की सब बातें अब ठीक हुई। उस समय मैं कुछ भी नहीं समझ सकी थी; और मैं तो अज्ञान— स्त्री जाति—मैं इन सब बातों का मर्म्म न तब कुछ जानती थी, न अब जानती हूं।"

"बेटी! पुत्र की वे सब बातें स्मरण होने से मुझे बोध होता है, कि स्वयं भगवान श्री हरि किम्बा अपर किसी महापुरुष ने मेरे गृह में जन्म लिया था।

नहीं तो भविष्यत् में क्या होगा, इसे पुत्र कैसे कह सकता, पुत्र जो कुछ कह गया है, सब ही हो रहा है। उसके कहे अनुसार कार्य्य न करने ही से जानता हूं कि पुत्र ने मुझे परित्याग करके चल दिया। तुम्हारी सास बड़ी पतिव्रता थी। बोध होता है कि उसी के पुण्य फल से भगवान श्री हरि ने स्वयं मेरे घर में जन्म लिया था। पुत्र ने बारम्बार मुझसे कहा "आप के भाग्य में अनेक कष्ट हैं, आप का सदाव्रत, आपकी अतिथिशाला, आपका दान धर्म्म, कभी आप को इस विनाशके पथ से रक्षा न कर सकेगा।" हाय! हाय! अब वे सब बातें पूरी हुईं।"

"आप को परित्याग करके मुझे काशी धाम जाने का प्रयोजन नहीं। मैं इसी जंगल में कई एक दिन राह देखूंगी। यदि चार पांच दिन में आपको छोड़ दें, तो आप के इस स्थान पर फिर आने से सग ही काशी धाम को चली जाऊंगी। और यदि सुन पाऊं कि आप का प्राण विनाश किया है, तो स्वामी की कुश पुतली बना कर निश्चय उसी के संग चिता रोहण करूंगी। सह मरण के भिन्न और मेरा द्वितीय पथ नहीं है।"

"पुत्री, मैं एक मुहूर्त्त भी तुम को दिनाजपुर की सीमा में चोर न रहने दूंगा। देवीसिंह क्या नहीं जानता कि मेरे पास अन्न धन सम्पत्ति कुछ भी नहीं है। उसी ने तो मेरा सर्वस्व हरण किया है। तो इस समय फिर मुझको किस लिये पकड़ता है, हा परमेश्वर पूर्व्व जन्म में कितना पाप किया था— यह भी क्या मनुष्य को सह्य होता है।"

"तो किस लिये पकड़ना चाहता है?"

वृद्ध—हमारा अभाग; उस बात को मैं किस मुंह से तुम्हारे निकट कहूं? बोध होता है किसी दुष्ट मनुष्य से सुना है कि तुम परम सुन्दरी हो। इस लिये तुमको पकड़ने के निमित्त ऐसी चेष्टा करता है। मैंने सुना है कि मुर्शिदाबाद के किसी एक भट्टाचार्य्य की विधवा स्त्री को पकड़ कर देवी सिंह ने गंगा गोबिन्द सिंह को देने के लिये प्रतिज्ञा की थी; किन्तु उस ब्राह्मण कन्या ने देवी सिंह के घर से भाग कर अपना धर्म्म बचा लिया। इस समय तुमको उस ब्राह्मण कन्या के पलटे में गंगा गोबिन्द सिंह के निकट भेजेगा, तुम एक मुहूर्त्त भी यहां बिलम्ब न करो, अभी भागो।"

" (सक्रोध) देवी सिंह क्या गंगा गोविन्द सिंह की भी सामर्थ नहीं, कि वह लोग मेरा धर्म्म नष्ट कर सकें। आप के पुत्र मुझसे निरन्तर ही कहते थे, कि रमणी गण स्वेच्छा पूर्बक धर्म्म पथ त्याग न करें तो जगत् में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो उनका धर्म्म नष्ट कर सके उस समय मुझे उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उनके साथ कितना ही तर्क किया करती थी साहेब के आदमियों के संग बिवाद करने से कितना ही मना किया। किन्तु तब उन्हों ने उदास हो कर मुझ से और बात चीत नहीं किया। अब सोचती हूं, कि उन्हों ने जो कुछ कहा था सब सत्य है। गत १२ बर्ष से नाना विपद और बिबिध संकटावस्था में पड़कर इस समय स्वयं देखती हूं, कि नारी जाति के धर्म्म रक्षा का भार स्वयं भगवान ने अपने हाथ लिया है। दुर्बल का बल ईश्वर, इस में अणु मात्र भी सन्देह नहीं मैं स्वयं इच्छा करके धर्म्म बिसर्ज्जन न करूं, तो कौन मेरा धर्म्म नष्ट कर सकता है? किन्तु मुझे और भी दुःख का विषय हुआ है, अब इस हत भागिनी के निमित्त आप को न जाने कितना मारें पीटें।"

रमणी के इतना कहते ही पुनः प्राप्त शोकावेग से उसका कन्ठ रुद्ध हुआ, वह मूर्छित होकर गिर पड़ी। वृद्ध ब्राह्मण ने उसको उठा कर अपनी गोद में बिठा लिया। कुछ काल पीछे युवती संज्ञा प्राप्त होने पर फिर कहने लगी—

"हा परमेश्वर इसी हत भागिनी के निमित्त इस परम धार्मिक वृद्ध को इतनी लांछना भोग करनी होगी। इस हत भागिनी को क्यों तुमने रूप और सौन्दर्य्य दिया जिसके लिये नारी जाति का रूप— जिसके निमित्त सौन्दर्य्य—वह तो मेरे चले गये। अब रूप और सौन्दर्य्य का क्या प्रयोजन है? अभी मैं अपना नाक कान काट डालूंगी शरीर को छिन्न भिन्न करूंगी।"

यह कह कर रमणी अपने मस्तक का केश नोचने लगी, बारम्बार ललाट में हाथ से पीटना आरम्भ किया।

वृद्ध ब्राह्मण ने रमणी का हाथ स्नेह से धर लिया "आत्म घातिनी होने का प्रयोजन नहीं" "आत्म घातिनी होने का प्रयोजन नहीं" यही कह कर उसको समझाने लगा।

रमणी किंचित शान्त होकर फिर आक्षेप पूर्बक कहने लगी—

"हा ! परमेश्वर क्यों मुझे नहीं मार डाला ? उस समय मृत्यु होने से सकल यन्त्रणा—सब कष्ट—दूर होते ।"

और श्वशुर की ओर देख कर कहा "वह भी तो अपना ही दोष है आप के पुत्र जो कुछ कह गये हैं, उस में की एक बात भी मिथ्या नहीं हुई। हा परमेश्वर ! मैंने देव पति पाया था। किन्तु उनको उस समय नहीं चीन्ह सकी। वह सदैव ही कहते थे " कर्म्म फल कोई नहीं रोक सकता" " कर्म्म फल सब को भोग करना होता है। आप ने मुझे तब सती न होने दिया। अब उसी कर्म्म का फल भोगना होगा।"

"पुत्री ! यह सम्पूर्ण कष्ट यन्त्रणा हमारे कर्म्म फल हैं इस में कोई सन्देह नहीं। किन्तु तब मैं तुमको किसके शव के संग में चिता रोहण करने को कैसे कहता। क्यों कि दुरात्मा देवी सिंह के आदमियो के प्रहार से उस बर्ष के एक ही दिन में प्राय: २०—३० जनों को मृत्यु होती थी। कांटा

लगी हुई बेल की डाल से*बारम्बार आघात कर के सब का प्राण विनाश किया था। जिन लोगों के मुंह पर मार पड़ी थी उन लोगों के शव को देख कर उनका चीन्हना कठिन था। उन के मुख की आकृति बिगड़ गई थी। मैं शत चेष्टा करके भी अपने पुत्र का शव चुन नहीं सका। जामाता का मृत देह देख कर उसे चीन्ह सका था। इसी से प्राण सम स्वर्ण प्रतिमा प्रभावती की सती होने की इच्छा प्रकाश करते ही, मैंने उसको जन्मान्त के लिये आज्ञा दे दी थी। यदि पुत्र का मृत देह निश्चय करके बाहर कर सकता, तो तुमको मैं खुशी से स्वामी के संग सती होनेके लिये अनुमति दे सकता। इस यन्त्रणा को भोगने के लिये क्या मैं तुमको कभी इस संसारमें रख सकता था? तुमको देखते ही पुत्र शोक से मेरा हृदय फट जाता है, पुत्र शोकानल शत गुण प्रज्वलित हो उठता है। पुत्री! पुत्र शोक क्या है,उसे तुम किस प्रकार जानोगी तुम्हें तो सन्तान ही न हुआ, पुत्र शोकानल कभी निर्वाण नहीं होता। निश्चय होता है कि यह शोकानल चितानल से मिल कर, जब शरीर को भस्म भूत करेगा तभी यह शोक विस्मृत हो सकेगा।"

* Vide note (8) in the appendix.

"मुझे संग लेकर खोजने से, मैं निश्चयही उनका मृत देह चुन लेती। उनका एक हाथ देखने से मैं निश्चय कह सकती कि यह उनका ही हाथ है। उनके मस्तक का एक केश भी मैं सेकड़ों लोगों के मस्तक केशसे चुन लेती। उनके हाथ की एक अंगुली देखनेसे मैं निश्चय करके कह देती, कि यह उंगली उन्हीं की है।"

"यह असम्भव बात है। सब लोगों की उंगली एक ही प्रकार की होती है। मुखाकृति न देखने से क्या मनुष्य चीन्हा जा सकता है।"

"मैंने निश्चय किया है कि उनके हाथ की एक उंगली देखने से मैं उनका मृत देह चीन्ह कर बाहर निकाल सकती थी। केवल मै ही क्यों? मुझे विश्वास होता है कि प्रत्येक पति प्राणा रमणी पति का एक गुच्छा केश अन्य मनुष्यों के मस्तक के केश से चीन्ह कर बाहर कर सकती है।"

"पुत्री! तो क्या पितृ स्नेह से भी पत्नी के प्रेम की इतनी सूक्ष्म दृष्टि होती है। पितृ मातृ स्नेह भी क्या पत्नी के प्रेम के निकट परास्त होता है?"

"पितृ मातृ स्नेह की अपेक्षा साध्वी के प्रेम की वहुत ही सूक्ष्म दृष्टि है या नहीं. उसे मैं स्वयं नहीं जानती। किन्तु आपके पुत्र एक दिन कहते थे, कि साध्वी का निःस्वार्थ प्रेम दो स्वतन्त्र आत्मा के सम्मिलन में सम्भूत है। सुतरां पुण्यवती माता के स्नेह की भांति, साध्वी का प्रेम किसी अवस्था में ओर प्रकार का नहीं होता। वह सदा ही कहते थे, मातृ स्नेह और साध्वी के प्रेम में ही ईश्वर की वर्तमानता अनुभूत होती है।"

"पुत्र क्या तुम से भी इन सब बातों को कहता था। हा! मेरे पुत्र का सदैव ही शास्त्रालाप और धर्म्मालोचना थी। इतनी अल्पावस्था में पुत्र ने कई शास्त्र अध्ययन किया था।"

"वह सदैव ही मुझ से शास्त्र की बातें कहना अच्छा समझता था। किन्तु मैं उसकी बातों को कुछ भी नहीं समझता, न मन देकर सुनता था। कभी कभी न समझकर उससे अनर्थक तर्क वितर्क करता था इसी से मुझ पर उसके अनुराग का संचार नहीं होता था। किन्तु तौ भी उसने मुझको कभी कोई कष्ट नहीं दिया। कभी कुवचन नहीं कहा।"

"मेरे पुत्र ने एक दिन भी किसी को कष्ट नहीं दिया। पराये का दुख देखने से पुत्र के चक्षु से अश्रुपात होता था। हा परमेश्वर ऐसे सुपुत्र का शोक क्या कोई सह सकता है? मैं स्वयं क्यों नहीं मर गया। जिस समय देबी सिंह के आदमी मुझे पकड़ने आये, मैं भाग गया! पुत्र ने स्वयं हाज़िर होकर कहा "मेरे वृद्ध पिता के धरने में चेष्टा करने से प्राण जायगा; मेरा नाम प्रेमानन्द गोस्वामी मैं स्वयं हाज़िर हुआ हूं।"

"अहा पुत्र का कैसा अद्भुत साहस था। उस समय यदि मैं हाज़िर होता तो मेरे पुत्र को फिर प्राण न देना पड़ता। पुत्री! आज मैं अपने पुत्र की भांति कार्य करूंगा। मैं स्वयं ही पकड़ा जाऊंगा। तुम शीघ्र भागो।"

श्वशुर की बात सुन कर रमणी किञ्चित काल चुप रही। पश्चात अनेक भविष्यत चिन्ता करके उसने भागना ही स्थिर किया। जिस कुटि में बैठ कर श्वशुर और पुत्रबधू बात चीत करते थे, उसके कुछ दूर में पश्चिम ओर और दो कुटी थीं। उनमें से एक में एक वृद्धा दासी बास करती थी।

दूसरी में और दो जन थे। बृद्धा को सब स्वरूप की मां कह कर पुकारते थे। और दोनों में से एक का नाम जगा और दूसरे का नाम रूपा था। जगा और रूपा आहार की तैयारी के लिये काष्ट बटोरने गये थे। बृद्धा गृह के अन्यान्य कार्य्य में व्यस्त थी। बृद्ध बैष्णव के पुकारते ही, वे उसके सम्मुख आ खड़े हुए। तब बृद्ध ब्राह्मण ने इन लोगों से बर्त्तमान की सम्पूर्ण घटना कही बृद्ध के कहने पर स्वरूप की मां, जगा और रूपा ने युवती को संग लेकर जंगल में प्रवेश किया। इस ओर बृद्ध ब्राह्मण कुटो से बाहर हो कर धीरे धीरे प्राण नगर की राह पर आया। राह पर खड़े हो कर उच्च स्वर से हरि संकीर्त्तन करने लगा। इसके हरि संकीर्त्तन का शब्द सुनतेही चार पांच जनों ने, "आज एक साले को पाया है—साला इसी जंगल में था," इसी भांति कहते कहते बड़े हर्ष से दौड़ कर बृद्ध को धर लिया, और "कहां धान लुका रक्खा है, दिखा दे," यही कह कर धमकाने लगे।

पञ्चम अध्याय।

रामानन्द गोस्वामी।

गताध्याय के वृद्ध ब्राह्मण का नाम रामानन्द गोस्वामी और जिस रमणी से बात चीत करता था उस का नाम देवी सत्यवती है। सत्यवती देवी रामानन्द की पुत्र बधू है, मालदह के अन्तर्गत गौड़ नगर में रामानन्द गोस्वामी का पैतृक वास स्थान था। मालदह, दिनाजपुर, रंगपुर पुरनियां इन्हीं चार ज़िलों के अनेक ज़मींदार और ऐश्वर्य्यवान् मनुष्य रामानन्द गोस्वामी के शिष्य थे। इन्हीं चार ज़िलों में रामानन्द की बहुत सी धर्मार्थ प्राप्त ज़मीन थी, उस के सम्पूर्ण ज़मीन की वार्षिक आय पचास हज़ार रुपये से न्यून नहीं थी। रंगपुर, दिनाजपुर और पुरनिया प्रभृति समीपी ज़मींदार गण और धनाढ्य लोग रामानन्द गोस्वामी का बहुत कुछ सन्मान करते थे। अनेक ज़मींदार विवाह वा श्राद्ध इत्यादि के प्रसंग में, गोस्वामी महाशय को अपने घर पधराने के निमित्त, दस बारह हाथी, आठ नव घोड़े और बीस पचीस भृत्य उन के घर भेजते थे, किन्तु

गोस्वामी महाशय उन के निमन्त्रण को ग्रहण करने का अवकाश भी नहीं पाते थे, उन के शिष्य इतने थे कि हरसाल एक बार भी सब शिष्यों के घर जाने को समय नहीं मिलता था।

रामानन्द गोस्वामी देश विदेश सर्व्वत्र ही परम धार्मिक वैष्णव कहा कर प्रसिद्ध थे, उनके घर में एक वृहत अतिथिशाला थी। उन की मधुर भाषिता और दान के बन्धान से मालदह में किसी को कभी अन्न कष्ट नहीं होता था। देश के किसी दुःखी दरिद्र को अन्नाभाव होने से परम वैष्णव रामानन्द तुरन्त उस के भरण पोषण का भार उठा लेते थे।

रामानन्द की सहधर्म्मिणी सुनीति देवी अत्यन्त सदाचारिणी थी। वह सुसन्तान की कामना करके अनेक व्रत और यज्ञ आचरण करती थीं। भद्रासन से एक कोस में भी किसी को भूखा छोड़ कर सुनीति देवी कभी स्वयं जल ग्रहण नहीं करती थी। भद्रासन से एक कोस में कोई दीन दुःखी अन्नाभाव से भूखा न रहने पावे इस के अनुसन्धान करने के निमित्त प्रति दिन दो पहर तक दस बारह दास

दासी चतुर्दिक प्रेरित होते। विशेष अनुसन्धान के पीछे वह घर लौट कर जिस समय कहते कि घर से उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूर्ब किसी ओर के एक कोस में कोई भूखा नहीं है, किम्बा जो भूखा था उसे अन्न दे दिया गया तब सुनीति देवी स्वहस्त से ही हविष्यान्न रन्धन करके पहले स्वामी को आहार कराती पीछे भोजन का शेष भाग आप खाती थी। परम वैष्णव रामानन्द आमिष भक्षण नहीं करते थे, सुनीति देवी भी पतिव्रत धर्मानुसार आहार संबंध में भी पति का अनुसरण करती थी।

रामानन्द को दो ही सन्तान थे एक पुत्र, एक कन्या, पुत्र का नाम प्रेमानन्द गोस्वामी, कन्या का प्रभावती देवी। रामानन्द ने अधिक शास्त्र नहीं पढ़ा था किन्तु उस का पुत्र प्रेमानन्द बीस वर्ष के होने के पूर्ब ही साहित्य, न्याय, दर्शन प्रभृति सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता हो गया। श्री मत् भागवत के प्रथम पृष्ट से शेष पर्य्यन्त सम्पूर्ण पुस्तक उसे कण्ठस्थ थी।

किन्तु चिरकाल किसी का भी सुख से नहीं बीतता। विपद राशि अदृश्य हो कर सब के मस्तक

पर झूलती है कब किस के मस्तक पर गिरती है, उसे कोई नहीं कह सकता। समय २ पर लोगों के मन में यही एक प्रश्न उठता है, कि ऐसे धार्मिक परिवार को भी क्या मंगलमय ईश्वर विपद से रक्षा नहीं करते? इस धार्मिक परिवार को यदि घटना के प्रवाह में बहते २ विपद-सागर में डूबना पड़ता है, तो किस प्रकार परमेश्वर को मंगलमय कहा जा सकता है? इस प्रश्न के उत्तर में हम यही कह सकते हैं कि विज्ञान चक्षु से जो कोई मानव मण्डली का इतिहास अध्ययन करेंगे, उनके मन में ऐसा सन्देह होना अधिक सम्भव नहीं है।

रामानन्द गोस्वामी ने अधिक समारोह के साथ पुत्र और कन्या दोनों की विवाह क्रिया सम्पादन करा ली किन्तु पुत्र के विवाह से दोही वर्ष पीछे, विश्वास होता है कि सन १७६० या १७६१ ई० में उन की स्त्री सुनीति देवी ने परलोक गमन किया। सुनीति के मृत्यु काल में प्रेमानन्द का वयस अट्ठारह और उसकी नव विवाहिता स्त्री का दस वर्ष का था प्रभावती का वयस चौदह वर्षसे अधिक नहीं था। वह स्वामी के साथ पिता के गृह में वास करने लगी;

और जननी की मृत्यु के पश्चात् पितृ के सम्पूर्ण गृह कार्य्य का भार उन्ही के हाथ रहा।

रामानन्द गोस्वामी की वर्त्तमान दुरवस्था जैसे उपस्थित हुई, उसको प्रकाश करने के पहिले, कोई एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करना उचित है।

सिराज की सिंहासन च्युति पर बङ्ग देश में अङ्गरेजों का बड़ा प्रभुत्व स्थापित हुआ। रोम साम्राज्य के शेषावस्था में जैसे प्रेटिरियन गार्ड नामक सैनिक दल रोमका हर्त्ता, कर्त्ता विधाता हुआ था; वैसे ही अङ्गरेज़ गण बंग के प्रेटिरियन गार्ड हो उठे। रोम की शेषावस्था में वहां के राजा के मनोनीत करने की क्षमता भी प्रेटिरियन गार्ड ने प्राप्तकी बंग देश में भी नवाब की मुकर्ररी और बरखा-स्तगी का अधिकार अङ्गरेज़ों के हाथ हुआ।

मुर्शिदाबाद के नबाव भीत स्वभाव मीरज़ाफ़र अङ्गरेज़ों के भय से सदैव शङ्कित रहते थे। अङ्गरेज़ सुयोग पाकर देश को एक बारगी लूटने लगे। बाणिज्य के उपलक्ष में उन्होंने देशीयजन साधारण पर घोर अत्याचार आरम्भ किया।

ग्रे नामक एक जघन्य चरित्र अङ्गरेज़ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मालदह की बाणिज्य कोठी का

अध्यक्ष था। मालदह बासी रामनाथ नामक एक दुश्चरित्र नर पिशाच ग्रे साहब के यहां नौकर हुआ। अङ्गरेज़ लोग देश के किसी सच्चरित्र मनुष्य को कभी अपने यहां नौकर नहीं रखते थे। इन देशीय लोगों में प्रवञ्चना, प्रतारणा, व्यभिचार नर हत्या इत्यादि किसी प्रकार के कुकार्य्यों को जो उत्साह से सम्पादन करने में अग्रसर होता, अंगरेज़ लोग उसी को केवल कार्य्यदक्ष जान कर, वाणिज्य कोठी में गुमाश्ता या नौकर रखते थे।

मालदह ज़िले में रामनाथ की भांति प्रवञ्चक और धूर्त्त मनुष्य अति अल्प थे। सुतरां ग्रे साहेब ने अपने यहां नौकर रक्खा।

इस समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की कोठी के साहब लोग कम्पनी की ओर से, बिलायत किम्बा चीन देश में भेजने के लिये, बङ्गदेश के किसी बणिक से कोई वस्तु मोल लें, तो बिक्रेता को नक़द मूल्य प्रायः नहीं देते थे। * कम्पनी के हिसाब में रुपया ख़रच लिख कर, उस रुपये से वे लोग अपने वाणिज्य के निमित्त अन्य एक विक्रेय द्रव्य क्रय करते थे; उस बिक्रेय द्रव्य पर ड्योढ़ा दूना मुनाफ़ा धरते थे।

* Vide note (9) in the appendix.

इसी तरह के व्योहार से सैकड़ों बणिज्य व्यवसाय एक बार ही निरन्न हो गये। निरन्न क्यों होंगे? एक आदमी से ईस्टइण्डिया कम्पनी की कोठी के अध्यक्ष ने एक हज़ार रुपये का बस्त्र मोल लिया। किन्तु उसे एक पैसा भी नकद न देकर, उसने उसी हज़ार रुपये से अपने निज बाणिज्य के लिये हज़ार मन तमाखू मोल लिया। पश्चात उक्त एक हज़ार मन तमाखू का मूल्य दो हज़ार रुपया धर कर उसी के नाम मढ़ दिया उसकी एक हज़ार मन तमाखू के परिवर्त्तन में एक हज़ार रुपये का बस्त्र और नकद एक हज़ार रुपया देना पड़ा। और किसी को इसी भांति तमाखू लेने पर यदि नकद रुपया देने में दो एक मासका बिलम्ब होता, तो अङ्गरेज़ों की कोठी के गुमाश्ता गण तुरत सिपाहियों को संग ले जा कर उसका घर बार लूटते, और उनकी स्त्रियों का धर्म्म नष्ट करते।

नवाब के कर्म्मचारी गण अंगरेज़ों को इस अत्याचार से हटा नहीं सक्ते थे और बाणिज्य कोठी के साहब लोग कहते थे इस व्यवहार के ज़रिए देशीय लोगों के विशेष उपकार होने की सम्भावना

है। कारण वह लोग बिविध विषय के बाणिज्य संबंध में अभिज्ञता लाभ कर सकेंगे। एक जुलाहा केवल कपड़े की सोदागरी करता है, उसे तमाखू लेने से अनायास ही उस में भी शिक्षा पा सकेगा। इसी भांति खृष्ट धर्म्मावलम्बी सर्ब देश और सर्बजन हितैषी अंगरेज़ महात्मा गण निःस्वार्थ प्रेम द्वारा परिचालित होकर कोठियों को तमाखू का बाणिज्य सिखाते थे, तमाखू व्यवसायी को लवण का व्यवसाय सिखाते थे, लवण व्यवसायी को चावल का बाणिज्य सिखाते थे, किन्तु इस शिक्षा से देश के एक बार ही उत्सन्न होने का उपक्रम हुआ।

एतद्भिन्न अनेक अंगरेज़ देशीय लोगों के निकट से बिक्रय द्रव्य क्रय करके, उस का मूल्य बिलकुल नहीं देते थे। देशीय बणिकों को अंगरेज़ों से लेन देन करने में अस्वीकार होनेसे किम्बा फ़रासीसी या वलन्देज़ों से कुछ लेन देन करने से, अंगरेज़ उस पर समुचित दण्ड बिधान करते थे, उन की स्त्रियों की मान मर्यादा नष्ट कर उन को जाति भ्रष्ट कर देते थे।

मालदह में ये साहब और उस के नौकर इसी प्रकार देशीय बणिकों का सर्वस्व नाश करने लगे। किन्तु

मूल धन होने से वाणिज्य किस प्रकार करना होता है, इस शिक्षा का भार जोनस्टोन, हे और बोल्ट साहबों ने लिया। इन तीनों महात्माओं से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के वाणिज्य का कोई संबंध नहीं था जौन्स्टन, हे और विलियम बोल्ट ने तिजारत (व्यापार) के लिये पुरनिया ज़िला में दूकान खोली थी इन का गुमाश्ता रामचरन दास देशीय वणिकों से प्रायः बाकी में जिन्स मोल लेता था। इन की वाणिज्य प्रणाली बड़ विलक्षण थी। ये लोग किसी जुलाहे से एक हज़ार रुपये का वस्त्र उधार लेते थे, पीछे उसी वस्त्र का मूल्य डेढ़ हज़ार रुपया धर कर किसी तमाखू बेचने वाले को देकर उस से डेढ़ हज़ार रुपया उसी समय लेते थे। उस डेढ़ हज़ार में से हज़ार रुपया मुनाफ़े का निकाल कर ५००) रुपये जुलाहे को देकर दो हज़ार रुपये का कपड़ा उधार लेते थे। इस उपाय से मूल धन न रहते भी वाणिज्य चलाने में कोई बाधा नहीं होती। मूल धन न रहने से कैसे वाणिज्य करना होता है जौन्स्टन, हे और बोल्ट साहबों के प्रसाद से पुरनिया के निवासियों को भली भांति उस की शिक्षा होने लगी।

पहिले हो लिख चुके हैं, कि रामानन्द गोस्वामी की पुरनिया और मालदह इन दोनों ज़िलों में अधिक बह्मव ज़मींन थो। उस ज़मीन की प्रजा में से अनेक मनुष्य वाणिज्य व्यवसायी थे। रामानन्द अतिशय प्रजा वत्सल ज़मींदार थे। अंगरेज़ वणिकों के ऐसे अत्याचार से किस प्रकार से प्रजा की रक्षा करेंगे इसोकी चेष्टा करने लगे। उन्हीं ने मालदह में ग्रे साहब के नौकर रामनाथ दास और पुरनियां के जौन्स्टन, हे और बील्ट साहबों के गुमाश्ता रामचरण दास को बहुत सा घूस देकर वश में किया। वे लोग रामानन्द की प्रजा पर अधिक अत्याचार नहीं करते थे। इस रीति से रामानन्द अपनी प्रजा को कुछ काल के निमित्त अंगरेज़ों के अत्याचार से रक्षा कर सके। किन्तु रामानन्द की बीस पचीस घर की प्रजा के सिवाय पुरनियां और मालदह के दूसरे हज़ारों लोग ग्रे साहब उनके नौकर रामनाथ, और जौन्स्टन, हे, बील्ट और उनके गुमाश्ता रामचरण के अत्याचार से एक दम तबाह हो गये। कई सौ लोग जाति भ्रष्ट हुए थे, उनकी गिनती नहीं हो सकती।

रामानन्द का पुत्र प्रेमानन्द स्वदेशीय लोगों को ऐसे भयंकर अत्याचार से पीड़ित देख कर सदैव अश्रुपात करता था। जिस स्वच्छ हृदया, सच्चरित्रा, शान्त सुशीला जननी के गर्भ से उन्हों ने जन्म लिया था उसके प्रभाव से प्रेमानन्द का हृदय ऐसे अत्याचार के देखने से द्रवेगा इसमें सन्देह ही क्या? ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सौदागरी कोठी के लोग आज किसी के घर की लूट करते हैं, कल एक गरीब जुलाहे की स्त्री का सतीत्व भ्रष्ट करते हैं, ऐसा भीषण व्यापार देख कर प्रेमानन्द ने इस अत्याचार को रोकने का संकल्प किया था। किन्तु उसके पिता उसे कोठी के लोगों से झगड़ने नहीं देते थे। रामानन्द ने कहा "बेटा। कम्पनी के लोग हमारी किसी रिआया पर अत्याचार नहीं करते, मैंने बहुत कुछ प्रार्थना करके ग्रे साहब और रामनाथ को वश में किया है। इस समय औरों के लिये तुम उनसे झगड़ कर अपने पांव में कुल्हाड़ी मारते हो।"

पिता की इस बात को सुन कर प्रेमानन्द ने कहा "देश भर के अत्याचार के दूर करने की

तदबीर न करने से, यह अत्याचार दावाग्नि की तरह प्रज्वलित होकर, सब को भस्मीभूत करेगा। आज अन्यान्य दस जनों पर अत्याचार होता है, और दो दिन पीछे हमारे ऊपर भी होगा। अन्त में अत्याचार से निरपराधी लोगों की रक्षा न करने से मनुष्य की धर्म्म रक्षा नहीं होती है।"

रामानन्द ने कहा हमपर ग्रे साहब या रामनाथ कभी अत्याचार नहीं करेंगे। मैंने अनेक प्रार्थना करके उनको वश में किया है। इस समय यदि औरों के लिये तुमने रामनाथ से शत्रुता की तो कल वे लोग हम पर अत्याचार करना आरम्भ करेंगे। दूसरे के लिये तुम अपना सर्वनाश न करो।

पिता की बात सुन कर प्रेमानन्द सजल नेत्र हो कहने लगा "इस देश के सब लोगों को उचित है, कि जी जान से इस अत्याचार को दूर करें। अब इस को निरबीज करने की चेष्टा न करने से, यह भीषण अत्याचार क्रमशः बढ़ता ही जायगा, और युग युगान्तर व्याप्त होकर यह भीषण अत्याचार सबको पीस डालेगा। अंगरेज़ लोग अतिशय अर्थ लोभी हैं; देश के सम्पूर्ण धन सम्पत्ति को सोख लेंगे। मैं ने

सोचा है कि जब रामनाथ दास किसी वाणिज्य व्यवसायी का घर लूटने जायगा, तब मैं अपने कई एक लठैतों को संग ले कर रामनाथ को पीटूंगा, और निराश्रय गरीबों को इन से बचाऊंगा।"

रामानन्द ने पुत्र की इस बात को सुनते ही चौंक कर कहा "बेटा तुम पागल क्यों हुए हो? कम्पनो बहादुर से लड़ाई करोगे?"

प्रेमानन्द ने कहा इस में कम्पनी बहादुर से लड़ने की क्या बातें हैं? ये लोग अन्याय से लोगों पर अत्याचार करते हैं इन को कभी ऐसा न करने दूंगा।

रामानन्द लड़के की बात पर सम्मत नहीं हुए उन्हों ने अत्यन्त क्रोध से कहा, बेटा तू ऐसी बुद्धि से मेरी विषय सम्पत्ति, मान मर्यादा सब नास कर देगा? कम्पनी के लोगों में स्वयं नवाब जाफ़र अली खां डर कर चलते हैं, और तू उन से झगड़ा करेगा तू निश्चय पागल हुआ है मैं तुझे घर में बांध रक्खूंगा।

पिता से इस प्रकार तिरस्कृत होने पर प्रेमानन्द ने किञ्चित क्रोध से कहा—"आप मेरे पिता

अत्याचार करेंगे, तब हम लोग मिल कर उस गरीब की इन लोगों के अत्याचार से रक्षा करेंगे। दो तीन बार अगर इन ज़ुल्मी गुमाश्ता और प्यादों की पीट कर ताड़ना दे दिया जाय तो फिर ये लोग अत्याचार करने में साहस न करेंगे। विशेषत: आप इस देश के प्रधान मनुष्य हैं आप पहले ऐसा करें, तो देश के और और लोग भी आकर हमलोगों को सहायता देंगे। सब लोगों की इच्छा है कि इनकी को ठयां गंगा में डुबा दें।"

पुत्र के कह चुकने पर रामानन्द ने कहा "अच्छा तो कम्पनी के साहब लोग जब कलकत्ते से सिपाही लाकर लड़ेंगे तब क्या करोगे?

प्रेमानन्द ने कहा "मुझे ऐसा भरोसा नहीं होता, कि इन दो चार बंगाली गुमाश्तों के मारने से कलकत्ते से सिपाही लाकर लड़ेंगे। लेकिन अगर वैसा हुआ, तोभी इस अत्याचार के निवारण न करने से देशवासियों को सदा अत्याचार सहना होगा। अब जैसा भयानक अत्याचार होता है, उसे जन्म भर सहते रहने के बदले तो युद्ध में आगे होना ही अच्छा है। अब तक आपके घर की स्त्रियों का अपमान न

करने ही से, आप इस पथ के अवलम्बन करने की इच्छा नहीं करते। किन्तु खूब समझ रखिये कि आप की स्त्रियों का अपमान करने पर उद्यत होने से, आप भी लड़ने में असम्मत न होंगे।

लड़ने की बात सुन कर रामानन्द अत्यन्त भीत हुए। प्रेमानन्द की पहिली बातों से उनका मन कुछ फिर गया था, परन्तु वह भाव अब स्थिर नहीं रहा। रामानन्द ने कहा "बेटा! पागल हुए हो। कंपनी के साथ लड़ना कैसा? नवाब सिराजुद्दौला को इन्होंने परास्त कर डाला, पुत्र तुम यह सब चिन्ता छोड़ दो। हमारी प्रजा पर तो अब तक उन्हों ने कुछ अत्याचार नहीं किया। जब वह ऐसा करेंगे तब जो उचित होगा किया जायगा।

प्रेमानन्द ने लम्बी सांस खींच कर कहा "केवल आपकी प्रजा पर क्या अत्याचार करेंगे और पांच सात साल में यही अत्याचार देश भर में व्याप जायगा। आज इन जुलाहे तमाखू वाले और सर्राफों की स्त्रियों के साथ जो अत्याचार होता है, पांच सात बरस पीछे ठीक ऐसा ही अत्याचार खुद आपके घर वालियों को सहना पड़ेगा।

यह कह कर वह अन्य स्थान को चले गये। इसके पीछे और भी दो तीन दिन अपने पिता के संग बादानुबाद किया। किन्तु उसका अन्तिम फल यह हुआ। कि रामानन्द ने समझ लिया कि प्रेमानन्द संसार का काम काज कुछ भी नहीं समझ सकता। रामानन्द के सब स्वजनो ने प्रेमानन्द को पागल निश्चय कर लिया।

* * *

प्रेमानन्द की स्त्री सत्यवती की वयस इस समय प्रायः बारह वर्ष की हुई थी वह भी स्वामी को क्षिप्त समझने लगी। सुतरां प्रेमानन्द ने मालदह का घर परित्याग कर कहीं अन्यत्र जाकर कुल काल व्यतीत करेंगे यही मनमें स्थिर किया। घटना के क्रम से उनको मालदह परित्याग करने का सुयोग तुरन्त ही आ गया। उनके पिता ने उनको पुण्य प्राप्त ज़मीन की जमा वसूल करने के लिये पुरनियां को भेजा।

इसके पहिले लिखा गया है कि इस समय जौन्स्टन, हे और बाल्ट साहब पुरनियां में बाणिज्य करते थे। मूल धन न रहने से किस प्रकार बाणिज्य

चलाना होता है, इसी विषय में बङ्गालियों को शिक्षा देने के अभिप्राय से बोध होता है, इन तीन महात्माओं ने पुरनियां में आदर्श वाणिज्यालय (model farm) स्थापित किया था।

इनका गुमाश्ता रामचरण दास पुरनियां के लोगों से बिक्री की सबही वस्तु उधार लेता। किन्तु इन लोगों में से और कोई इस आदर्श वाणिज्यालय से जिन्सका मूल्य नहीं पाता। मूल्य न पाने ही से क्या? मृत्यु होने पर भी मनुष्य की आत्मा अनन्त काल तक बिचरती रहेगी। जौन्सटन, हे और वाल्ट साहब खृष्ट धर्म्मावलम्बी मनुष्य हैं। कदाचित वह लोग ऐसा सोचते थे, कि बंगाली रुपया हाथ में पाने ही से ख़र्च कर डालते हैं। सुतरां बिक्री के मूल्य का सम्पूर्ण रुपया एक बार ही पर लोक में रख देंगे। इसी से फिर इन बङ्गाली बणिकों को अपना अपना रुपया अनुचित व्यय करने का सुबिधा न रहेगा। ये अंग्रेज़ हैं, इनका सभी उद्देश्य अच्छा है। निश्चय होता है यही उद्देश्य इन लोगों को जिन्स का मूल्य नहीं देने देता था और बङ्गालियों का मन काला होता है। उन लोगों के इस महदुद्देश्य को काले बंगाली नहीं जान सकते।

प्रेमानन्द ने पुरनिया में पहुंच कर उस स्थान के बंगाली और हिन्दुस्थानो बणिकों की दुर्दशा श्रवण किया। इन लोगों की दुःख यन्त्रणा देख कर उनका हृदय अत्यन्त ही द्रवित हुआ। जो सम्पूर्ण बणिक जौन्स्टन, हे और वाल्ट साहबों के गुमाश्तों को उधार में जिन्स देना अस्वीकार करें, तो गुमाश्ता उनके गृह में प्रवेश कर उनकी धन सम्पत्ति को हर लेते हैं। प्रेमान्नद ने पुरनिया में पहुंचने के दो तीन दिन पीछे ही पुरनिया के गवर्नर शेर अली खां से भेंट किया। प्रेमानन्द युवक होने पर भी बड़े शास्त्रज्ञ और बुद्धिमान थे। गवर्नर शेर अली खां बहादुर उनसे बर्त्तालाप करके उन पर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। शेर स्वयं भी जौन्स्टन, हे और वाल्ट साहबों के ऐसे बाणिज्य का बड़ा बिरोधी था। किन्तु इन लोगों को पुरनिया में वह दण्ड नहीं दे सक्ता था। इसी से चुप ही रहा था।

प्रेमानन्द ने शेर अली से कहा "आप नवाब क़ासिम अली के निकट इन सब अत्याचारों के विषय में पत्र लिखिये मैं स्वयं उसी पत्र के संग मुंगेर जाकर नवाब से भेंट करूंगा।"

शेर अली ने प्रेमानन्द की बात पर सम्मत होकर जौन्स्टन, हे और वाल्ट साहबों के गुमाश्ताओं के सम्पूर्ण अत्याचारों के विषय में नवाब को लिखा। प्रेमानन्द ने शेर अली का पत्र लेकर मुंगेर जाकर नवाब क़ासिम अली से भेंट किया। नवाब क़ासिम अली ने, शेर अली ख़ां का पत्र पढ़ कर, उसी क्षण उसको हुक्म भेजा "पुरनिया के सम्पूर्ण प्रजा गण के घर घर इस मतलब का परवाना जारी करना होगा, कि अंगरेज़ों की उधार में वह लोग कोई बिक्री की वस्तु न बेचें। यदि नवाब के इस परवाना का उल्लंघन कर कोई भी अंगरेज़ों को उधार में जिन्स बेचेंगे, तो बिकी हुई जिन्स नवाब सरकार में कुर्क होगी, और बेचने वाले को और भी जुरमाना देना होगा।"

पुरनिया में इस समय जौन्सटन, हे और वाल्ट साहबों के भिन्न और कोई अंगरेज़ बणिक नहीं थे। सुतरां वाल्ट साहब ने इस परवाना के जारी होने की बात सुन कर बहुत क्रोधित होकर शेर अली को धमका कर एक पत्र*लिखा। गवर्नर वेरेलस्ट के विरुद्ध वाल्ट साहब ने इसी घटना के

१२ वर्ष पीछे जब मुक़द्दमा चलाया था, तब वाल्ट साहब के इसी पत्र पर बड़ी हल चल मची थी। और मीर क़ासिम के ऐसे परवाना जारी किये जाने पर, जौनस्टन और हे साहबों ने जिससे अंगरेज़ों के साथ मीर क़ासिम का बहुत शीघ्र विवाद उपस्थित होवे, उसकी विशेष चेष्टा की थी। किन्तु उस सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटना से इस उपन्यास का कोई सम्बन्ध नहीं। सुतरां प्रेमानन्द ने इस पर जो सम्पूर्ण कार्य किया था केवल वही इस स्थान पर प्रकाश किया जायगा।

इस परवाना के जारी होने पर जौनस्टन, हे और वाल्ट साहेबों का आदर्श वाणिज्यालय पुरनिया से उठ गया। प्रेमानन्द ने देखा कि चेष्टा करने से अनेक अत्याचार निवारण किया जा सकता है। सुतरां उन्हों ने मालदह में लौटते ही रामनाथ दास के बिरुद्ध गवर्नर वासिंटार्ट साहेब के निकट अभियोग उपस्थित करने के अभिप्राय से कलकत्ता जाना निश्चय किया। किन्तु उन के मालदह पहुंचते ही मीर क़ासिम से अंगरेज़ों का युद्ध आरम्भ हुआ। इस समय कलकत्ता जाने से, कुछ लाभ नहीं। प्रेमा-

न्द आगे प्राय: दो वर्ष तक मालदह वाले घर में रहने लगे। उन के स्वजन इस समय भी उन को पागल कहा करते थे। उन की स्त्री सत्यवती भी उन का समय समय किंचित् अनादर करती थी।

* * * * *

मीर क़ासिम के सिंहासन च्युत होने पर फिर भी मीर जाफ़र सिंहासनारूढ़ हुए। तब ईस्टइण्डिया कम्पनी का अत्याचार और शतगुण बढ़ा। बंग के वाणिज्य व्यवसायी और अन्यान्य लोगोंके यन्त्रणा की सीमा न रही। किन्तु मालदह के वाणिज्य कोठी के अध्यक्ष ग्रे साहिब ने अनेक कुकर्म्मों के कारण कोर्ट औफ् डाइरेक्टर की तीव्र दृष्टि में पड़ कर शीघ्र ही विलायत की यात्रा की। ग्रे साहिब बंग कुलांगार रामनाथ के एक प्रधान गुरु जन थे। सुतरां ग्रे साहिब के विलायत चले जाने पर १७६५ साल में प्रेमानन्द ने कलकत्ता जा कर रामनाथ के विरुद्ध लार्ड क्लाइव के निकट अभियोग उपस्थित किया। किन्तु इन सम्पूर्ण अभियोगों का विचार होने के पूर्व ही लार्ड क्लाइव विलायत को लौट गये।

* Vide note (10) in the appendix.

वेरेलस्ट साहेब बंग के गवर्नर के पद पर नियुक्त हुए। वेरेलस्ट साहेब से रामनाथ का पूर्व ही से वैमनस्य था। सुतरां रामनाथ के विरुद्ध अभियोग उपस्थित होते ही, वेरेलस्ट साहेब ने उस को अपराधी कर मुर्शिदाबाद के जेल में भेज दिया। * रामनाथ ने अनेक अत्याचार और अनुचित उपाय धारण करके जो कुछ रुपया कमाया था उस में से बहुत सा उसे घूस में नव कृष्ण मुंशी को देना पड़ा, इसी प्रकार पापात्मा रामनाथ अत्यल्प काल ही में धन प्राण दोनों से हीन हुआ।

प्रेमानन्द ने सोचा कि मालदह और पुरनियां का अत्याचार अब क्रम से घटेगा किन्तु उन की यह आशा वृथा है। एक ग्रे साहेब विलायत चले गये, तो और दस ग्रे साहेब आ पहुंचते हैं एक रामनाथ मरा या जेल गया, तो बङ्ग माता और सैकड़ों रामनाथ दिनों दिन उत्पन्न करती है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अत्याचार घटना तो दूर रहा, धीरे धीरे और भी बढ़ने लगा विशेषत: कम्पनी को बङ्ग और बिहार की दीवानी प्राप्ति होने

* Vide note (11) in the appendix.

पर अङ्गरेजों का सामर्थ्य और भी दृढ़ हो गया तब उनके अत्याचार का प्रवाह और कौन रोक सकेगा।

प्रेमानन्द कलकत्ता से मालदह को लौट कर पूरे चार पांच वर्ष तक अपने पिता के मालदह वाले घर में रहने लगे। उनको सब ही पागल सोचा करते थे। अन्य मनुष्यों की वार्त्ता दूर रही, उनकी स्त्री सत्यवती देवी भी उनके कार्य्यों का अनुमोदन न करती थी। प्रेमानन्द ने सोचा कि अन्त में अपनी स्त्री को अपने मतमें लाऊंगा। इसी अभिप्राय से १७६८ साल से १७७० साल तक मालदह में रहने के समय स्त्री के संग समय समय अनेक शास्त्रालाप करते थे। सत्यवती ने इसी समय स्वामी से अनेक शास्त्र संबंधी शिक्षा पाई थी।

* * * * *

सन १७७० ई० में बंग देश में घोर दुर्भिक्ष पड़ा सबसे पहिले पुरनिया में दुर्भिक्ष आरम्भ हुआ। रामानन्द गोस्वामी अत्यन्त प्रजा वत्सल भूम्याधिकारी थे। वह अपनी पुत्र, पुत्रवधू, कन्या और जमाता को संग लेकर अपनी प्रजा की प्राण रक्षा करने के लिये पुरनिया में चले गये। पुरनिया में उनकी

ज़मीदारी कचहरी में परिवार के रहने योग्य गृहादि थे। वह अपनी ज़मीदारी कचहरी में आकर रहने लगे। उनके निज का जो कुछ रुपया था, उसे सम्पूर्ण ही इस दुर्भिक्ष पीड़ित प्रजा की रक्षा के निमित्त व्यय करते थे। कभी कभी धन का अभाव होने पर उनके शिष्य सहायता करते थे। किन्तु इस वर्ष शिष्य गण को भी सहायता करने का अतिशय सुबीता न था।

* * * * *

इस दुर्भिक्ष के दो वर्ष पूर्व ही से राजा देवी सिंह ने पुरनिया के अन्तर्गत प्रायः सब परगना का इजारा लिया था। पुरनिया के राजस्व अदा का भार भी देवी सिंह ही के हाथ में था। सन १७७० ई॰ के दुर्भिक्ष से कोई ज़मीदार प्रजा से एक पैसा कर का भी अदा नहीं कर सके थे, बरं प्रजा की प्राण रक्षा के लिये प्रत्येक ज़मींदार को अपने अपने पूर्व सञ्चित अर्थद्वारा सहायता करनी पड़ी। किन्तु देवी सिंह ईस्ट इण्डिया कंपनी के राजस्व अदा करने के लिये ज़मींदार तालुकेदारों को कचहरी में लाकर कैद रखता था, ज़मींदारों के हाथ में एक भी पैसा नहीं

था। अधिक मार पीट करके भी देवी सिंह उन से एक रुपया भी न ले सका। अन्त में उस ने ज़मीदार तालुकेदारों के परिवार की कुल कामिनियों को भी पकड़ कर कचहरी में लाने का हुक्म दिया। देवी सिंह के प्यादा और बरकन्दाज़ उन कुल कामिनियों के अंग के स्वर्णाभरण तक छीनने लगे। कोई कोई ज़मींदार तालुकेदारों का अपमान करने के लिये उनके घर की स्त्रियों को विवस्त्रा करके कचहरी में खड़ी कराने लगे। जो सब हिन्दू कुल कामिनी कभी चन्द्र सूर्य्य का दर्शन भी नहीं करती थीं, बंग कुलाङ्गार देवी सिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आश्रय पाकर उन पर ऐसा भीषण अत्याचार आरम्भ किया।

रामानन्द गोस्वामी की सम्पूर्ण ज़मीन पुण्य में प्राप्त बिना कर की थी। तौभी देवी सिंह ने रामानन्द से भी रुपया तलब किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर हेस्टिंग्स यह स्वीकार नहीं करते थे कि किसी को भी बिना करके जमीन भोग करने का अधिकार है। रामानन्द ने देवी सिंह के भय से राजशाही की रानी भवानी से ५००००) पचास हज़ार

रुपया क़र्ज़ लेकर गत तीन वर्ष का राजस्व प्रदान किया। किन्तु सन १७७१ ई० में फिर देवी सिंह ने रामानन्द से एक वर्ष के राजस्व की दावी की। अब रामानन्द को एक रुपया देने की भी सामर्थ्य नहीं थी। कई एक दिनों के पश्चात देवी सिंह ने रामानन्द को पकड़ने के लिये अपनी जमीदारी कचहरी से प्यादा और बरकंदाज भेजा। अब तक रामानन्द सपरिवार अपनी जमीदारी कचहरी में निवास करते थे। देवी सिंह के प्यादा उनको पकड़ने के लिये आये हैं, इस बात को सुन कर वह भय और त्रास से एक बार ही हत ज्ञान हो गये। तब प्रेमानन्द ने उनको साहस देकर कहा "आप को कुछ भय नहीं, मैं ही हाज़िर होता हूं। आप मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजियेगा। किन्तु एक मुहूर्त भी विलम्ब न करके, आप शीघ्र ही अपनी पुत्र बंधू और कन्या को संग लेकर रंगपुर के किसी शिष्य के घर जा कर आश्रय लीजियेगा।"

पिता को इस भांति समझाकर, प्रेमानन्द स्वयम घर के बाहर आये। उनके घर से बाहर आने के पूर्व ही देवी सिंह के आदमियोंने उनके भगिनि

पति को पकड़ लिया था। प्रेमानन्द ने देवी सिंह के बरकन्दाजों को पुकार कर कहा—"मेरा नाम प्रेमानन्द गोस्वामी। मैं स्वयम हाज़िर होता हूं। अभी कचहरी में जाकर देवी सिंह का जो कुछ पावना है, उसे पटाऊंगा। किन्तु तुम लोगों को मेरे वृद्ध पिता के पकड़ने की चेष्टा करने से निश्चय ही मेरे हाथोंसे प्राण खोना होगा। किञ्चित अपेक्षा करो, मैं तुम्हारे संग ही संग चलता हूं।

यही कह कर प्रेमानन्द गृह में प्रवेश करके एक सुतीक्ष्ण छुरी वस्त्र में लपेट संग लेकर चले। उन्होंने मनहीं मन स्थिर किया कि इसी तीक्ष्ण छूरी द्वारा देवी सिंह का प्राण विनाश कर अत्याचार के हस्त से बंग देश को निर्मुक्त करूंगा।

* * * *

देवी सिंह के प्यादा और बरकन्दाजों ने प्रेमानन्द और उनके भगिनी पति राधा कृष्ण अधिकारी को माल कचहरी में राजा देवी सिंह के सम्मुख ला खड़ा कर दिया।

देवी सिंह तकिया टेक कर एक तख़्त पोश पर गद्दी बिछा कर बैठे हैं। अलबेला में तम्बाकू

हाथ में तीक्ष्ण छुरी देख कर चमक उठा और उसी समय प्रेमानन्द को अपने अधीन कारागार में ले जाने के निमित्त सिपाहियों को इङ्गित किया ।

उस इङ्गित का अर्थ—अभी इस का प्राण विनाश करो—था । अन्य क़ैदियों को सिपाही गण सन्ध्या समय साधारण कारागार में रखते थे ।

* * * * *

इस के दूसरे दिन प्रातःकाल प्रायः पचीस तीस क़ैदी, देवी सिंह के लोगों की मार से मर गये । रामानन्द गोस्वामी ने लोगों से सुना कि देवी सिंह के आदमियों के प्रहार से उनका पुत्र प्रेमानन्द और जामाता राधाकृष्ण अधिकारी मारे गये हैं । तब उन का शव लाकर अन्त्येष्टि क्रिया करना स्थिर किया । राधाकृष्ण अधिकारी का मृत शरीर पाया गया । किन्तु प्रेमानन्द का शव चुन कर बाहर न कर सके । अनेक मनुष्यों के शरीर प्रहार से बिकटाकृति हो गये थे सब लोग कहने लगे, प्रेमानन्द को अधिक मारा था, इसी से उस के शव की पहचान कठिन है ।

प्रेमानन्द की भगिनी प्रभावती देवी स्वयं स्वामी के साथ सती हो गई। रामानन्द पुत्र वधू को संग लेकर पैदल कृष्ण गंज के मध्य हो कर बराबर रङ्ग-पुर की ओर भाग गये।

षष्ठ अध्याय।

देवी सिंह।

रामानन्द गोस्वामी अपनी पुत्र बधू, एक वृद्धा दासी और तीन चार विश्वासी प्रजा को संग लेकर, अति कष्ट से रंगपुर पहुंचे। रंगपुर में अनेक ज़मींदार उनके शिष्य थे। वह एक शिष्य के घर उतरे, शिष्य आदर पूर्व्वक उनको अपने घर में ठहरा कर यत्न से उनकी सेवा सुश्रूषा करने लगा। किन्तु वह पुत्र और कन्या के शोक से बहुत ही दुखी थे।

इस ओर देवीसिंह के अत्याचार से पुरनियां प्रायः जन शून्य हुई। सन १७७२ ई० के सेप्टेम्बर मास में बंग के गवर्नर वारेन हेस्टिङ्गस परिदर्शन कमेटी (Committee of circuit) के अध्यक्ष हो कर आपही पुरनियां में आये और देवी सिंह के काम की देख भाल किया। इस समय गंगागोबिन्द सिंह हेस्टिङ्गस के साथ थे। उनके संग न रहने से घूस का बन्दोबस्त नहीं होता, इस लिये हेस्टिङ्गस उनको साथ रखते थे।

मुहम्मद रज़ा खां के समय में गङ्गागोबिन्द सिंह जब मुर्शिदाबाद में कानूनगो का काम करते थे, तभी से देबी सिंह से उनकी घोर शत्रुता थी। सुतरां वैर साधन का सुयोग पाकर देबी सिंह को पदच्युत कराने के निमित्त वह हेस्टिङ्गस से अनुरोध करने लगे। देबी सिंह के बिरुद्ध पुरनियां के लोगों ने अनेक अभियोग उपस्थित किया था। किन्तु वारेन हेस्टिङ्गस उसके लिये उसे कभी पदच्युत नहीं करते थे। केवल गङ्गागोबिन्द सिंह के अनुरोध से हेस्टिङ्गस ने देबीसिंह को पदच्युत किया।

देबी सिंह के इजारा लेने के पहले पुरनियां की वार्षिक आय १६ लाख रुपया थी। किन्तु देबीसिंह के अत्याचार से पुरनियां के अधिकांश निवासी दूसरे स्थान को चले गये; अनेक मनुष्य मर गये। इसी से पुरनियां की आय इतनी घट गई, कि कई एक वर्ष पीछे वार्षिक आय छ लाख रुपये से अधिक न होती।

देबी सिंह ने देखा कि हेस्टिङ्गस गंगा गोबिन्द सिंह के परामर्शानुसार ही सदैव कार्य्य करते हैं। सुतरां अब वह गंगागोबिन्द सिंह के साथ मेल करने

का उद्योग करने लगे। इस लिये देबी सिंह और गंगागोबिन्द सिंह के मध्य विवाद उपस्थित हुआ, वह आगे लिखा जायगा। यहां केवल यही कहा जाता है कि देबी सिंह ने गङ्गागोबिन्द सिंह से क्षमा प्रार्थना की, और जिस रमणी के लिये इन लोगों में प्रथम विवाद आरम्भ हुआ उसे देबी सिंह ने खोज पकड़ कर गङ्गागोबिन्द सिंह को देना अंगीकार किया। इस प्रकार गंगागोबिन्द सिंह और देबी सिंह में फिर भी मित्र भाव स्थापित हुआ। परस्पर सहायता करने के लिये गंगा जल स्पर्श कर के प्रतिज्ञा की गई। इस घटना के कई एक मास पीछे गंगा गोबिन्द के अनुरोध से हेस्टिंग्स ने देबी सिंह को फिर मुर्शिदाबाद की प्रोविन्शियल कौंसिल का दीवान बनाया।

मुर्शिदा बाद की प्रोविन्शियल कौंसिल के साहब लोग सुरापान आदि बिबिध व्यसना शक्त थे। वह लोग राजस्व संबंधी काम काज कुछ नहीं जानते थे—और न जानने की चेष्टा करते थे। इन्हीं तरुण वयस्क अंगरेज़ लोगों को बुरे कामों में विशेष रूप से उत्तेजित कराने के लिये देबी सिंह दो एक

देशीय स्त्रियों को घर लाकर इन लोगों के पास भेज देता था। हमने पहले ही कहा है कि देबी सिंह अंगरेज़ों को बशीभूत करने के लिये सदैव दस बारह स्त्रियों को अपने घर जुटा रखता था। * और इन्हीं हतभागिनी रमणियों का एक एक नवीन नाम रख कर साहबों के पास भेजता था। किसी किसी स्त्री को दिलखुश बीबी के नाम से पुकारता था। किसी का नाम रंग बहार रखता था। हिन्दू स्त्रियों को कभी कभी तप्त काञ्चन, रस मंजरी, रस की डाल, टटका मधु इत्यादि निन्दित भावोत्तेजक नामों से अभिहित करता था। प्रोविन्शियल कौंसिल के साहब लोग उन्हीं सम्पूर्ण तप्त कांचन और दिलखुश बीबियों के साथ सर्बदा आमोद प्रमोद में दिन बिताते थे। इस ओर देबी सिंह कौंसिल का हर्त्ता कर्त्ता होकर देश का नाश करने लगा, किन्तु कई वर्ष पीछे प्रोविंशियल कोन्सिल की निद्रा भंग हुई। घूस विभाग के सम्बन्ध में देबी सिंह से उनका विवाद हुआ। वह लोग देबी सिंह को बरखास्त करने में उद्यत हुए।

* Vide note (12) in the appendix.

देबी सिंह उपाय हीन होकर फिर भी गंगा गोबिन्द के शरणागत हुए। गंगा गोबिन्द सिंह ने देबी सिंह को जैसे समझाया था, वह उपन्यास के द्वितीय अध्याय में वर्णन किया गया है, गंगा गोबिन्द से समझाये जा कर देबी सिंह अपनी प्रतिज्ञा पालन की चेष्टा करने लगा। जिस रमणी को पकड़ कर गंगा गोबिन्द को देना अंगिकार किया था, उसको खोजने के लिये सब ओर गुप्त दूत भेजा।

* * * * *

देबी सिंह के दूतोंने जाकर सुना कि एक जन वृद्ध ब्राह्मण एक युवती को साथ लिये भाग कर रङ्गपुर के किसी एक ज़मींदार के घर ठहरा है। इस बात को सुन कर उन लोगों ने समझा कि वह जिस ब्राह्मण कन्या को खोजते हैं, वह यही युवती होगी। ऐसा स्थिर करके बल पूर्बक उस रमणी को पकड़ कर देबी सिंह के पास ले जाने की ताक में लगे। किन्तु यह रमणी रामानन्द गोस्वामी की पुत्र बधू है। रामानन्द देबी सिंह के गुप्तचरों की इन सब बुरे कामों की चेष्टा जान कर रंगपुर छोड़ पुत्र बधू को संग ले दिनाजपुर के जङ्गल ही जङ्गल भ्रमण करने लगे। पुत्र-

बधू के निकट देबी सिंह की इन सब बुरी चेष्टाओंका हाल कुछ भी प्रकाश नही किया। उनके मन में यह आशंका हुई थी, कि उनकी पुत्र बधू इन सब बातों को श्रवण करने पर निश्चय ही आत्म हत्या कर धर्म्म रक्षा की चेष्टा करेगी।

सन १७७८ ई० में रामानन्द रङ्गपुर परित्याग कर इसी प्रकार जङ्गल ही जङ्गल भ्रमण करने लगे। कई महीने इसी तरह से बीते। पश्चात् दिनाजपुर के अन्तर गत प्राण नगर के जङ्गल के उत्तर प्रान्त में कोई एक जङ्गल के छिपे हुए स्थान में तीन पर्ण कुटी तैयार करके गत तीन वर्षों से वहां बास करते थे। अब उनकी जीविका निर्वाह के लिये भिक्षा के सिवाय और कोई उपाय नहीं था। सुतरां बैरागी का भेष धारण करके भिक्षा बृत्ति का अवलम्बन किया। प्रायः तीन वर्षों से यहां निर्विघ्न निवास करते थे। किन्तु दिनाजपुर के राजा की मृत्यु के पीछे सन १७८१ ई० में देबी सिंह रङ्गपुर और दिनाजपुर के कलेक्टर गुड लेड साहब के दीवान होकर दिनाजपुर में आये तब देबी सिंह के बरकन्दाज़ गण ने भागी हुई प्रजा के खोजने के लिये दिनाजपुर के उत्तर बिभाग

में आकर सुना कि रामानन्द गोस्वामी नामक एक भूम्याधिकारी इसके निकटवर्त्ती किसी एक जङ्गल में बास करता है। वह लोग रामानन्द को पकड़ने की चेष्टा करने लगे। पीछे जिस भांति रामानन्द स्वयं पकड़े गये, और उनकी पुत्र बधू ने, एक बुढ्ढा दासी, और दो विश्वासी भृत्य के सङ्ग भाग कर आत्म रक्षा की वह पहिले अध्याय में लिखा ही गया है।

—*—

सप्तम अध्याय।

कलकत्ता राजस्व कमिटी की स्थापना।

देवी सिंह जिस भांति दिनाजपुर और रंगपुर के कलेक्टर गुडलैंड साहेब के दीवान नियुक्त हुए थे, उसे संक्षेप में प्रकाश न करने से पाठकगण उपन्यास की लिखी आगे की घटनावली को सहज में नहीं समझ सकेंगे।

यह पहिले ही लिखा गया है कि वारेन हेस्टिङ्गस भारत वर्ष के गवर्नर जेनरल ने पंच साली बन्दोबस्त की मैयाद बीतने पर कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, बर्द्धमान, पटना, दिनाजपुर और ढाका इन छः ज़िलोंकी राजस्व संबंधीय प्रोविंशियल कौंसिलोंको उठा कर उनके स्थान पर केवल कलकत्ते में एक राजस्व कमेटी स्थापन का अभिप्राय प्रगट किया। किन्तु गवर्नर जनरल की कौंसिल में वह और वारवेल साहब एक ओर थे। और दो मेम्बर उनके बिरुद्ध थे। कौंसिल में विरुद्ध दल प्रायः उनके किसी प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं करता था। और कोर्ट ओफ़ डाइरेक्टर ने भी उन

लोगों के १७७७ साल की ४ थी जुलाई के पत्र में राजस्व बन्दोबस्त सम्बन्धीय हेस्टिंग्स के अन्यानेक प्रस्तावों को स्वी नहीं किया था। और हेस्टिंग्स के दिनों दिन नवीन नियम प्रचार करने की इच्छा से उनका किञ्चित तिरस्कार भी किया था। * सुतरां हेस्टिंग्स साहब पहले कुछ काल तक चुप रहे।

किन्तु जब बिहार के कल्याण सिंह ने बिहार प्रदेश की सम्पूर्ण ज़मीन के बन्दोबस्त कर लेने का प्रार्थी होकर गङ्गा गोबिन्द सिंह के द्वारा हेस्टिङ्गस को चार लाख रुपया घूस देने का प्रस्ताव किया, और उसी समय जब १७८० साल की जुलाई में दिनाजपुर के राजाकी मृत्यु हुई, और दिनाजपुरके राज परिवार के भिन्न भिन्न पक्ष से घूस देने की बात आने लगी, तब हेस्टिंग्स अपना लाभ दबा न सके। सम्पूर्ण बन्दोबस्त का भार हाथ में स्वयं लेने के लिये संकल्प किया, किन्तु वह चिन्ता करने लगे, कि किस उपाय और प्रणाली द्वारा बन्दोबस्त का भार अपने हाथ में लेने से भविष्यत में उनकी कोई धूर्त्तता प्रकाश न होवेगी, प्रोविन्शियल कौंसिल उठा देने पर भी गवर्नर जेनरल

* Vide note (4) in the appendix.

की कौंसिल के हाथ में, (अर्थात अपनी निजी कौसिल के हाथ में) सम्पूर्ण क्षमता रखने से अनेक बिपद की आशंका है। वह भली भांति जानते थे कि उनके कार्य्य में बाधा न दे सकने पर भी, कौंसिल के कार्य्य बिवरण पुस्तक में विपक्ष दलका बिरुद्ध मत लिपिबद्ध रहने से, कोर्ट आव डाइरेक्टर उनकी धूर्त्तता समझ सकेगी। यद्यपि उनकी कौंसिल के सभापति होने से समान समान मत भेद होने पर उनके मतानुसार कार्य्य होता था, तौ भी कोर्ट ऑफ़डाइरेक्टर इसके पूर्व अनेक घटनाओं की उनके बिपक्ष दल लिखित मन्तव्य के पाठ करने से उनकी सम्पूर्ण धूर्त्तता जान सकती थी। बर्द्धमान की रानी और राजशाही की रानी भवानी के साथ उन्हीं ने और बारवेल साहेब ने जो अन्याय व्यवहार किया था, कोर्ट ऑफ़डाइरेक्टर उसे उनके बिरुद्ध दल का मन्तव्य पढ़ने ही से जान गई थी। *

हेष्टिङ्गस ने इन्ही सब बिषयों की विशेष चिन्ता करके मनही मन पहले स्थिर किया था, कि प्रौविन्शियल कौंसिल को उठा दूंगा; किन्तु बन्दोबस्त

* Vide note ( ) in the appendix.

का भार अपने ही हाथ में या गवर्नर जेनरल की कौंसिल के हाथ में रक्खूंगा। सम्पूर्ण बन्दीबस्त का भार जिससे गंगागोबिन्द सिंह के हाथ में रहे, ऐसा ही उपाय करूंगा। इसी अभिप्राय को साधने के लिये पूर्व संस्थापित छः प्रोविन्शियल कौंसिल को उठाकर उनके स्थान पर केवल कलकत्ता में एक कमेटी ओफ़रेविन्यू (Committee of Revenue) स्थापित की। कई एक तरुण वयस्क अंगरेजों को इसी कमेटी औफरेविन्यू का मेम्बर नियुक्त किया। गंगागोबिन्द सिंह को कमेटी के दीवान का पद दे कर राजस्व बन्दीबस्त संबंधीय सम्पूर्ण अधिकार दूसरे प्रकार में उनके हाथ समर्पण किया। कमेटी औफ़रेविन्यू के उन्ही तरुण वयस्क अङ्गरेज़ मेम्बर गण इस देश का आचार व्यवहार कुछ नहीं जानते थे। दीवान गंगागोबिन्द सिंह ही सब काम अपनी इच्छानुसार सम्पादन करते थे। कमेटी के मेम्बर गण पर केवल हस्ताक्षर का भार था।

सन् १७७१ ई० में यह कमेटी औफरेविन्यू स्थापित हुई इस समय से लार्ड कार्नवालिस के आने तक राजस्व बन्दोबस्त संबंध मे गङ्गागोविन्द

सिंह एक प्रकार गवर्नर जनरल हुए। देश के सम्पूर्ण ज़मींदार, तालुक़ेदार गङ्गागोविन्द सिंह के हाथ में आ गये। * * * *

* * * * *

सन् १७८० ई० में दिनाजपुर के राजा की मृत्यु होने पर, उन के नाबालिग़ दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी होना गवर्नमेन्ट ने स्वीकार किया और नाबालिग़ से चार लाख रुपया सलामी लेकर उन की पैतृक जमींदारी का उन के ही साथ बन्दोबस्त किया।

हेस्टिंग्स और गङ्गा गोविन्द सिंह ने नाबालिग़ राजा के रक्षणावेक्षण का भार गुडलैड साहेब और देबी सिंह के हाथ में समर्पण किया। इसी कार्य्य के लिये देबी सिंह गुडलैड साहेब के दीवान होकर आये थे, बोध होता है कि इस नाबालिग़ की सम्पूर्ण जमींदारी गङ्गा गोविन्द सिंह ने स्वयं आत्मसात करने ही के लिये देबी सिंह की भांति उपयुक्त मनुष्य के हाथ में उस के रक्षण आवेक्षण का भार समर्पण किया, और हेस्टिङ्गस का प्राप्य घूस सहज ही में अदा हो सके, इस अभिप्राय से गुडलैड की

भांति उपर्युक्त लोगों को असीम क्षमता प्रदान पूर्वक रङ्गपुर और दिनाजपुर का कलेक्टर नियुक्त किया।

गुडलैड और देवी सिंह दोनों ही तुल्य प्रकृति के मनुष्य थे। गुडलैड को विलायती देवी सिंह और देवी सिंह को देशीय गुडलैड कहने से कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी।

इन्हीं दोनों महात्माओं ने दिनाजपुर के पुराने राज कर्म्मचारियों को बरखास्त किया, और इन्ही सकल वृद्ध कर्मचारियों के परिवर्त्तन में नितान्त जघन्य चरित्र के कई एक युवकों को नियुक्त किया। फिर उन्हीं ने राज्य का व्यय घटाने के लिये, दिनाजपुर की रानी का मासिक वेतन जो मृत राजा के समय से धर्म्मानुष्ठान और व्रतादि व्यय निर्वाहार्थ पाती थीं, बन्द कर दिया।

राज्य का रुपया किसी प्रकार से फ़ज़ूल ख़र्च नहीं होता, इस लिये रानी के पिता किम्वा सहोदर भ्राता उन से साक्षात् करने आते, तो भोजन ख़र्च के लिये प्रतिदिन आठ पैसे से अधिक नहीं दिया जाता था, किन्तु स्टेट के मैनेजर गुडलैड के किसी मित्र और बन्धु फिरङ्गी के राजप्रासाद में उपस्थित

होने से, राजा के सम्मान रक्षार्थ, और इस भांति अगत्यागत लोगों के साथ समादर प्रदर्शनार्थ, स्टेट से ब्रान्डी और शामपियन में प्रतिदिन का खर्च तीस चालीस रुपये से भी टप जाता था। * इस प्रकार सुनियम और उदारता से गुडलैड साहेब और देवी सिंह दिनाजपुर स्टेट का रक्षणावेक्षण करने लगे।

कुछ दिनों पीछे देवी सिंह ने दिनाजपुर के राजा की सम्पूर्ण ज़मींदारी और रंगपुर एद्रिकपुर की सब ज़मींन का एक मुसलमान के नाम से स्वयं इजारा लिया यह बन्दोबस्त बुरा नहीं हुआ। कलेक्टर गुडलैड साहब का दीवान ही स्वयं, उनके आधीन दो ज़िलों की सारी ज़मीन का इजारेदार हुआ। गुडलैड साहेब यह सब देख कर भी नहीं देखते, और सुनकर भी नहीं सुनते थे। वह ख्रीष्ट धर्म्मावलंबी मनुष्य थे, बायबिलमें स्पष्ट उपदेश है, (Resist no evil) अत्याचार को न रोकना। सुतरां गुडलैड कभी देवी सिंह के किसी अत्याचार या अन्याय व्यवहार का निवारण नहीं करते थे। और देवी सिंह को कुछ भी धर्म्माधर्म्म का ज्ञान नहीं था,

* Vide note (13) in the appendix.

यह कभी नहीं कहा जा सकता। एक ओर जैसे अपने स्वार्थ के लिये दिनाजपुर की सम्पूर्ण ज़मीन का उन्हों ने इज़ारा लिया था, दूसरी ओर गंगागोबिन्द सिंह के भी विशेष उपकार साधन की चेष्टा करने लगे। दिनाज़पुर के नाबालिग़ राजा को दबाकर ज़मींदारी का बहुत सा अंश गङ्गागोविन्द सिंह को कवाला करा दिया, ऐसा क्यों नहीं करेंगे। गङ्गा गोविन्द ही के अनुग्रह से उन्हें गुडलेड साहेब की दीवानी मिली थी, गङ्गा गोविन्द ही के प्रसाद से वह दिनाजपुर राज के रक्षक नियुक्त हुए थे, गङ्गा गोविन्द ही की सहायता से उन्हें नाबालिग़ राजा की ज़मींदारी का इज़ारा मिला था अब भी वह गङ्गा गोबिन्द सिंह का अनुग्रह चाहते हैं, सुतरां कृतज्ञता का चिन्ह स्वरूप दिनाजपुर के राजा की ज़मींदारी का बहुत कुछ अंश छल, बल, कौशल से उन्हीं ने गङ्गा गोविन्द को दिलाया था।

इसी प्रकार सन् १७८१ ई० में देबी सिंह ने रङ्गपुर, दिनाजपुर और एद्रिक्रपुर का इज़ारा लेकर, इन तीन ज़िलों के सब ज़मींदारों से बढ़ती जमा मांगी। सन् १७७० ई० के दुर्भिक्ष में देशके एक तृतीयांश

कृषकों का प्राण नष्ट हुआ था। इस लिये उसी साल से ज़मीदारों की आमदनी बिलकुल घट गई थी। उस दुर्भिक्ष के समय से उन लोगों के अधिकार की अधिकांश ज़मीन अब तक गिरी दशा में पड़ी हुई है। उस के पीछे और पंच साला बन्दोबस्त के समय जब कुल ज़मींदारों ने पैतृकी ज़मींदारी परित्याग नहीं की, तब उन लोगों की वारेन हेस्टिङ्गस की दुष्टता से बहुत बड़ी जमा में अपनी अपनी ज़मींदारी का बन्दोबस्त करना पड़ा था। ऐसी अवस्था में ज़मींदारों को फिर बढ़ती जमा देने का और उपाय नहीं था। ज़मींदार गण के बढ़ती जमा की क़बूलियत अस्वीकार करने से देबी सिंह उन्हें पकड़ कर क़ैद करता था। ज़मींदारों ने उस समय अपनी २ ज़मींदारी से इस्तीफ़ा देने के लिये प्रार्थना की। किन्तु पूर्ब बर्षों की बाक़ी जमा बेबाक़ न कर देने से किसी ज़मींदार ने इस्तीफ़ा देने पर भी देबी सिंह के हाथ से छुटकारा नहीं पाया। सुतरां ज़मींदार गण प्रथमतः देबी सिंह के कारागार से मुक्ति लाभ करने के लिये बढ़ती जमा में सम्मत हुए। क़बूलियत देने के कई दिन

पीछे देबी सिंह के अधीनस्थ लोगों ने जमा वसूल करना आरम्भ किया। उन लोगों से विविध प्रकार के अब्वाब और कम्पनी के रुपये के हिसाब में नारायणी रुपयों पर बट्टा इत्यादि तलब किया। निराश्रय ज़मींदार गण इतने रुपये देने में समर्थ न हुए। तब देबी सिंह के सिपाहियों ने ज़मींदार, तालुक़ेदार और कृषकों को पकड़ कर प्रहार करना आरम्भ किया।

दस वर्ष पहिले देबी सिंह ने पुरनिया में जो अत्याचार किया था, वह अत्याचार, वह निष्ठुरता, इस अत्याचार की समता में कुछ भी नहीं है। देशीय अनेक कृषकों ने अपने स्त्री पुत्र सहित जंगलों में प्रवेश किया। देवी सिंह ने सोचा कि सम्पूर्ण कृषक अपने २ खेतों का धान्य लेकर भागे हैं। तब इन सब भागे हुए कृषकों को खोजने के लिये जंगल जंगल बरकंदाज़ों को भेजने लगा। उसके भेजे हुए बरकन्दाज़ से जो दिनाजपुर के उत्तर प्रदेश में गये थे रामानन्द गोस्वामी पकड़े गये।

अष्टम अध्याय।

कारागार।

देवी सिंह के बरकन्दाज़ गण रामानन्द गोस्वामी को पकड़ने पर, कृषकों ने किस जंगल में कहां धान्य छिपा रक्खा है, यह पूछने लगे। रामानन्द ने उन लोगों के प्रश्न का कुछ उत्तर न दिया, चुप हो रहे।

बरकन्दाज़ गण अपने प्रश्न का कुछ उत्तर न पा कर उन्हें पीटने लगे, किन्तु बहुत मार पीट पर भी कुछ काम न निकला तब उन्हें बांध कर देवी सिंह को तहसील कचहरी को ले चले।

रामानंद गोस्वामी ने समझा था कि उनकी पुत्र बधू को पकड़ने के अभिप्राय से देवी सिंह ने इन बरकंदाज़ों को भेजा है किंतु वास्तविक बात और थी। भागी हुई प्रजा ने जंगल में अपना धान्य कहां छिपा रक्खा है; इसी की खोज के लिये यह सब बरकंदाज़ दिनाजपुर के उत्तर प्रान्त में आये थे किंतु यहां आकर इन्हों ने सुना कि रामानंद

गोस्वामी वेष बदल कर प्राण नगर के जंगल में रहा करते हैं।

रामानन्द को दिनाजपुर में भी बहुत सी माफ धर्म्म प्राप्त ज़मीन थी। किन्तु हेस्टिङ्गस की दुष्टता से देश की सब माफी ज़मीन पर भी कर लगाया गया है। अब देश में और कोई बिना कर के ज़मीन जोत बो नहीं सकता। देबी सिंह के दफ़्तर में रामानन्द के नाम पर बहुत सो जमा बाकी पड़ी है। बरकन्दाज़ गण रामानंद का नाम सुनते ही उनकी खोज में लगे उन्होंने सोचा कि जमा न देनेकी नीयत से रामानंद कपट वेष से जंगल में छिपा हुआ है।

बरकन्दाज़ों ने रामानंद को पकड़ कर देबी सिंह के कारागार में रक्खा वह वहां पहुंचते ही उस स्थान का भीषण अत्याचार देख कर उसी क्षण चैतन्य हीन हो गये।

* * * *

यह कारागार कैसा भयङ्कर स्थान है! क्या यहां भीषण अत्याचार ही हुआ करता है? मनुष्य क्या मनुष्य ही पर इस प्रकार अत्याचार कर सकता है? इस कारागार में दुःख देने वालों के हृदय

क्या पाषाण मण्डित हैं? कारागार में पड़े हुए हत भागी जैसी यन्त्रणा भोग करते थे, निश्चय होता है कि नरक में भी पापियों को इस तरह कष्ट यन्त्रणा भोग करना नहीं पड़ता।

क्रन्दन एवं आर्त्तनाद के भीषण शब्द से सम्पूर्ण कारागार परिपूर्ण है। चहुं ओर से "मरे मरे" "बाबा रे" "प्राण गये रे" चीत्कार का शब्द सुना जाता है किसी स्थान में सिपाही गण एक एक कैदी के हाथ की अंगुली एकत्र बांध कर उसमें लौह शलाका छेदते हैं, कहीं तीन चार जन प्रतिष्ठित ज़मींदार संतान को रस्सी से एकत्र बांध कर निरन्तर उनकी पीठ पर त्रिकुआ प्रहार करते हैं। चोट पर चोट के मारे इन लोगों की पीठ का चमड़ा उखड़ गया है। इसी चर्म्म शून्य पीठ पर और कुछ काल पीछे कंटकपूर्ण बेल की शाखा से आघात करते हैं।

दुग्ध-फेन—निभ-सुख शय्या में जिन सम्पूर्ण ज़मींदार संतान की निद्रा नहीं आती आज उन्हीं को पीठ में सैकड़ों कांटे बिद्ध हो रहे हैं, आज तप्त लोह दण्ड के प्रहार से उन की पीठ जलती है।

इन सब अत्याचार पीड़ित ज़मींदार तालुकेदारों की जो कुछ अस्थावर सम्पत्ति थी, वह पहले ही कुर्क और नीलाम हो गई किन्तु उस से भी उनका देन और जमा अदा नहीं होती। देवार्च्चना, दान धर्म्म और अन्यान्य परिवार संबंधी व्यय निर्वाह के लिये इन सब ज़मींदार तालुकेदारों की जो निष्कर सीर की ज़मीन, यानी जो जोत थी, उसे भी देबी सिंह ने नीलाम कराकर अत्यल्प मूल्य पर स्वयं मोल ले लिया। देश के एक मनुष्य की भी ज़मीन मोल लेना साध्य नहीं है, सुतरां किसी किसी ज़मीदार के हज़ार रुपये की सीर ज़मीन देबी सिंह स्वयं एक रुपया पर बैनामा कराते हैं।

कलेक्टर गुडलैंड साहेब देबी सिंह के इन सब अत्याचार और प्रवञ्चना मूलक व्यवहार की कुछ भी नहीं सुन सके विश्वास होता है, वह निद्रावस्था में थे नहीं तो इस देशव्यापी अत्याचार का बिन्दु बिसर्ग भी उन के कानों में प्रवेश क्यों न हुआ?

देबी सिंह के कारागार में ज़मींदार तालुकेदारों के सिवाय हज़ारों प्रजा भी कैद की गई थी। प्रहार से इन सब कृषकों में, किसी का हाथ, किसी का पांव

टूटा है, किसी के चक्षु नष्ट हुए हैं, कोई बिलकुल गमन शक्ति से हीन होकर पड़ा है, असंख्य कृषक प्रहार की यन्त्रणा सह्य न कर सकने से मृत्यु को पुकार रहे हैं "संसार में परमेश्वर नहीं है" "भगवान की दुहाई नहीं" यही चिल्ला रहे हैं।

देवी सिंह के बरकन्दाज़ इन निराश्रय हत भागे कृषकों के हस्त भग्न करते हैं, उन हाथों ने क्या कभी किसी का अनिष्ट किया है? इन दुर्बल हाथों के परिश्रम का फल सब बङ्गवासियों को अन्न प्रदान करता है। इन दुर्बल हाथों के परिश्रम फल के बदले ईस्ट इण्डिया कम्पनी चीन देश से अनेक सुखद वस्तु उपार्जन करती है। इङ्गलैण्ड वासी जन साधारण पर्य्यन्त इन हाथों के परिश्रम से सदा सुख भोग करते हैं येही निराश्रय कृषक-गण अहर्निश परिश्रम करके जितना फल लाभ करते हैं, उस का शतांश भी वह स्वयं नहीं भोग सकते, तो क्यों इन लोगों पर ऐसा घोर अत्याचार? इस प्रश्न का उत्तर क्या हम सुन सक्ते हैं? ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अधिक अर्थ का प्रयोजन है। कृषकों को सर्बस्व प्रदान करना

होगा; ईस्ट इण्डिया कम्पनी को धर्म्मशिक्षा प्रदान के लिये अति उच्च वेतन में लार्ड विशप नियुक्त करना होता है, राजस्व अदा के लिये गुडलेड की भांति उपयुक्त कलेक्टर और देवी सिंह की भांति उपयुक्त दीवान नियुक्त करना होता है, शान्ति रक्षक और विचारक नियुक्त करना होता है; कृषकों के अपना सर्बस्व प्रदान कर इनका व्यय न उठाने से देश शासन का व्यय किस तरह चलेगा? कृषक केवल अह-र्निश परिश्रम करके अर्थ सञ्चय करेंगे। किन्तु उन के श्रमोत्पन्न फल में उन का कोई अधिकार नहीं।

संसार में यदि ऐसा ही न्याय विचार होता है, तो चोर की क्यों निन्दा करें? दस्यु को क्यों गाली दें? यदि विचारक, शान्ति रक्षक और धर्म्म शिक्षा के लिये लार्ड बिशप इत्यादि नियुक्त करने के निमित्त, प्रजा को बिलकुल ही सर्बस्व हीन होना पड़ता है, तो उन विचारक, शान्ति रक्षक, लार्ड बिशपों को नियुक्त न करके, प्रजा को चोर और डकैतों के हाथ में दे देना ही अच्छा है।

वस्तुतः इस संसार में जितने दिन तक बिचा-रक, शान्ति रक्षक और धर्म्मशिक्षार्थ लार्ड विशप का